पुस्तक

श्रीगुरुघर में दानविधि

अर्थात्

जिनसे सज्जनों को गुरुवाक्य "कूड़ निखुटे नानका ओड़क सच रही" सत्य प्रतीत होकर ब्राह्मणों को दान देने में रुचि बढ़ेगी और अज्ञाना (जो कुछ लेख लिखयो) इत्यादि सवैयों के उलटे अर्थ करके सिंहों को पाप का भागी बनाते हैं, उन को पूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा

यह पुस्तक

गुरुविद्यारत्न सुखलाल उपदेशक श्रीभारतधर्ममहामण्डल रोपड़ानिवासी "नवीनसिंहशिक्षा" रचयिता द्वारा

"सनातनधर्मछापाखाना"
मुरादाबाद में छपकर प्रकाशित हुई

प्रथमबार १०००

सन् १९०७ | | मूल्य ४ आना

प्रार्थना

(१) पाठक गण इस पुस्तक को अथ से इति पर्यन्त अवलोकन करें ॥

(२) पुस्तक पढ़ते पढ़ते जब अक्षरों के ऊपर अंक सटिप्पणी का चिन्ह (फुट नोट) आजाय तो उसकी इबारत को प्रथम पढ़ो जो नीचे बारीक टाइप से लिखी है फिर उसी जगह से पढ़ो जहां से छोड़ी है।

(३) पाठक गणों इस पुस्तक में आपको यदि कहीं संदेह प्रतीत हो तो मुझे सूचित करना दुबारा उचित समझकर ठीक कर दिया जावेगा क्योंकि यह पुस्तक खण्डन (किसी का मन दुखित) करने के लिये नहीं रचा गया है सिर्फ गुरूसाहिब का श्रेष्ठ उपदेश फैलाने के लिये और अनेक लोगों को पाप से बचाने के लिये रचागया है।

(४) जिस साहिब को इस पुस्तक का खण्डन करना हो वह इस पुस्तक के अंत में लिखे पांच नियमों का प्रथम फैंसला करले नहीं तो बालकबुद्धि कहलाएगा ॥

(५) सिर्फ एक दो वाक्य पुनरुक्त भी लेख में आए हैं सो दूषण नहीं किन्तु भूषण ही है क्योंकि श्रेष्ठ जानकर लिखे हैं ॥

भूमिका

मित्रों ! कलिप्रेरित अधर्म्मी पुरुष केवल यही कहेंगे कि ब्राह्मणों ने अपने पालन पोषण के वास्ते यह दान का पुस्तक रचा है सो यह उनकी केवल हठधर्म्मी और मूर्खता है क्योंकि गुरुमत में कलु के उद्धार के लिये नाम दान स्नान ही मुख्य माना है ॥

(१) गुरमुख नाम दान इस्नानु ॥ आद ग्रंथ रामकली सिध गोष्ट महल्ला १ शब्द ३६

(२) नाम दानु इस्नानु द्रिड़हु सदा ॥ आदग्रन्थ राग मारू डखणे महल्ला ५ श्लोक २०

(३) काम क्रोध लोभ मोह तजारी ॥ दृढ़ नाम दान इस्नान सुचारी ॥आद ग्रंथसाहिब राग सूही महल्ला ५ घरु ३

(४) मनकी मन माही रही न हर भज्यो ॥ न तीर्थ सेवेयो चोटी काल गही ॥ आ० ग्रंथ० राग सोरठ म० ९ श० ३ तु० १

(५) तीर्थ जप्प दया दत्तदान । जो को पावै तिलका मान॥ जपजी पौड़ी २१ आद ग्रंथ ।

(६) दान हु तै इसनानहु वंजे भस्स पई शिर खुत्थे ॥ आ०ग्रन्थ राग मांझ की वार महल्ला१श्लोक २५ ॥

(७) द्विजन दीयहु दान दुर्जन को दृष्टि दिखैहु ।
सुखी राखियहु साथ शत्रु शिर खड्ग बजैहु ।
(चरित्र २१ दशम ग्रंथसाहिब रूपकौर को उपदेश
गुरु दश का)

अब सज्जन पुरुष उन अधर्मियों पर कभी विश्वास नहीं करेंगे जो इन सवैयों (जोकुछ लेखलिखयो०) का अनर्थ कर लोगों को नारकी बनाते हैं क्योंकि खासकर उनके अनर्थ और अज्ञान का निवारण इस पुस्तक में भली प्रकार कियागया है। आशा है कि सर्वत्र सज्जन जन पठन पाठन और श्रवण से लाभ उठाकर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे।

संवत १९६१ वि०
श्रावण प्र०१

ह० गुरु विद्यारत्न सुखलाल
उपदेशक-श्रीभारतधर्म
महामण्डल, रोपडनिवासी

पुस्तक रचने का कारण

इस समय नवीन सिंह (तत्व खालसा) को ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा देख कर उनसे कुछ ऐसा विरोध हो रहा है जो उनकी निंदा में तत्पर हैं न केवल आपही करते हैं बलिक जहां जहां उनके गुरु साहिबान ने अपनी वाणी में ब्राह्मणों की स्तुति की है उस में से भी बुद्धिबल से अर्थ का अनर्थ करके निंदा निकालते हैं जिसको पुरातनी सिख देखकर हंसी करते हैं परंतु वह मूर्ख अपनी भेड़ या खिचड़ी जुदी ही पकाते हैं उनका अभिप्राय यह है कि ब्राह्मणों की पूजा उठाकर अपनी पटड़ी जमा लें खूब अरदासें करायें और उनका प्रसाद छकें। ब्राह्मणों में तो दान लेने के वास्ते भिन्न भिन्न लोग थे परंतु यह एकही सब प्रकार का दान ले लेते हैं गुजरातियों की तरह गायें भैंस घोड़ा आदि आचार्यों की सदृश मृतकानिमित्त के वस्त्र आदि लेने में ढील नहीं करते डकौतों की तरह तिल तेल सज्जी साबुन लोहा आदि प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं ग्रहण में यदि कोई दान देवे तो खुशी से लेलेते हैं अर्थात् जो मिले सब को मां का दूध समझकर स्वीकार करते हैं आश्चर्य्य यह है इस में अपने गुरु की आज्ञा का प्रमाण देते हैं कि (दान दीयो इनहीं को भलो अर आन को दान न

लागत नीको) अर्थात् दान देना सिंहों को ही अच्छा है और को नहीं वास्तव में अनेक वाक्य दशमें पादशाह ने सिंहों को दान लेने के निषेध में फरमाये हैं स्पष्ट लिखा है कि दान पूजा लेने वाला न मेरा सिख (शिष्य) है न सिंह न खालसा परंतु हम पहिले गुरप्रतापसूर्य्यप्रकाश से यह लिखते हैं कि उक्त सवैये किस स्थान पर कहे गये हैं और उनमें दान लेने की किसको आज्ञा है उसके पश्चात् दशम गुरु साहिब के श्रीमुखवाक्य और ग्रंथों से लिखेंगे जिन से सिंहों को दान लेना निषिद्ध होगा ।

अथ-दान-विधि

दशवें पादशाह जब दुर्गा को प्रकट करके नैनादेवी के भवन से नीचे उतरे तो उस वक्त उनका बड़ा तेज हो रहा था इस कारण कोई मनुष्य उनके समीप न गया सब से प्रथम केशवदास जी जिन्हों ने हवन प्रयोग भगवती सिद्ध कराने के वास्ते कियाथा मिले और दुर्गा के प्रत्यक्ष होने का हाल पूछा तो उन्हों ने यह फरमाया यथा—

श्री मुख ते तब सर्व सुनायो ॥ प्रथम रूप दरशन जिम पायो ॥ वरं ब्रूह श्री वचन उबाचे ॥ तब हम इच्छत चित के जाचे ॥ एवमस्तु कहि भेट सु लैकै ॥ अंतरध्यान भई वर दैकै ॥ लघु कृपाण एह कर ते दीन ॥ अति अनंदते सिर धर लीन ॥ विप्र तुहारी करुणा पाई । कार्य सिद्ध

भये समुदाई ॥ इत्यादिक सभ भनयो प्रसंग । सुन केशव चित आनंद संग ॥ धन्न धन्न तुम साति गुरु पूरे । विप परमेश्वर दरशान हरे ॥ कली काल महि दरशान भयो । तुम सम जग में अपर न वयो ॥ अव चल आंनद पुरे अनंद॥ द्विज दीनन दिहु दान वुलंद॥पूर्ण भई सकल अभिलाखा॥ महां महानम इस दिजभाखा॥ले तिह साथ नाथ तवचले । गिरवर के उतरत भे तले॥ = ॥दुर्गा के प्रकट होने का प्रसंग केशवदास जी ने सुन कर गुरुजी से कहा कि आनंपुर में चलकर यज्ञ करो और ब्राह्मण गरीबों को दान देवो गुरु साहिव केशवदास को साथ लेकर आनंदपुर आये और यज्ञ करने का हुकम नंदचंद दीवान को दिया।यथा।हुकम जग करवे को दयो।अनक अहार सनघ घै भयो।पूप पूरिका वहु पं[1]चामृत । विप्र साध वोलो पठ जित कित । मन भावत भोजन को खायहु। अधिक दान सभहन कहु पायहु ॥ धृंद अशरफी घने रजत पण॥ जाचक करे निहाल अनक गण॥ दान देख विसमत नर नारी। भयो कुलाहल पुरि महि भारी ॥ दिज केशव तव नहीं वुलायो । विदत न सभै जु उठकर आयो ॥ तिन सुन अधिक रूसवो लीना। मुह न हकारयो इह क्या कीना। श्री अंतरजामी सभ जानी ॥ नंद चंद सो गिरा वखानी॥ अव पंडित कहु आन हकारी। अस

---

(१) मोहणभोग अर्थात् तिहौला।

कहु विसर गयो तिस वारी ॥ सुनकर हुकम गुरूकहु ऐसे । तहि गमनयो जंहि पंडित वैसे ॥ दिज जू सति गुर तुमहि हकारा । सहित दछाना लेहु अहारा ॥ विप्र कहयो अव हौ नाहिं जावौं । नहीं सुभोजन मुख मैं पावौं ॥ पृथिम विप्र सिख साध जिवाये । पाछे ते मुझ बोल पठाये ॥ सहि न जाय विपरीत वडेरी ॥ हुतो मुख सुद्ध नाहिं तिस केरी ॥ कर्म राजि उत्तम जगत मझारी ॥ सर्व विषै हम रहित अगारी ॥ अव पश्चाती किम मैं जाऊँ ॥ अचऊ असन ब्रह्मत्त लजाऊँ ॥ निजगुरु ढिग कहिये अरदास । दिज नाहिं आये तुमरे पास ॥ सुनकै नंद चंद कहि वानी । धीरज धरिये तुम गुणखानी ॥ तजहु कोप अव रहे न याद् । अव तुम चलकै अचहु प्रसाद् ॥ एह विध नंद चंद बहुभाती । करी असरधा दिज उरहाती ॥ लीन मनाय संग ले गमना । जहां विराजत श्रीगुरु भवना ॥ कलगीधर वड आदर दीना । निकट वठाय तोष वहु कीना ॥ नंद चंद सव भन्यो प्रसंगा । वानी छंद सवैयन संगा ॥

अर्थात् गुरुसाहिब के हुकमानुसार नंदचंद दीवान ने ब्राह्मण सिख साधों अभ्यागतों को बुलाकर प्रशाद छकाया और दक्षिणा अशरफी रुपैये टके दिये और गरीबों को यथोचित धन देकर प्रसन्न किया अनंदपुर में बड़ा आनंद हुआ परंतु उस वक्त केशवदास को बुलाना भूलगये गुरुसाहिब

ने यह सुनकर नंदचंद दीवान को बुलाकर फरमाया कि अभी पंडित जी के पास तुम जाओ और कहो कि महाराज आप उस वक्त मेरे याद से भूलगये कृपादृष्टि करके अब चलिये भोजन करिये और अपनी दक्षिणा लीजिये उन्होंने उसी प्रकार पंडितजी के पास जाकर जब कहा तो उन्होंने जवाब दिया कि अब मैं न जाऊंगा न भोजन करूंगा। क्योंकि पहिले और ब्राह्मणों आदिको भोजन करा दिया पीछे से अब मुझे बुलाया है यह उलटी रीति मैं नहीं सह सक्ता कि जो मनुष्य मुख्य हो उसको याद न रखें। तमाम कर्म में मैं आगे रहा अब पीछे याद किया पीछे से भोजन करना ब्रह्मत्व को लाज लगाना है इस कारण उनसे कहदो वह नहीं आते नंदचंद अनेक प्रकार की विनती करके उनको मनाकर साथ लेआये। गुरुजी ने पास बैठाकर बड़ा सन्मान किया और उनकी विनती में यह सवैये श्रीमुख से उच्चारण किये--

सवैया

जो कुछ लेख लिखयो विधना,
सोई पायत मिश्र जू शोक निवारो।

अर्थात् जो कुछ विधाता ने लिखा है वही मिलता है इसकारण मिश्रजी अब शोक दूर करो।

मेरो कछु अपराध नहीं,

गयो याद ते भूल न कोप चितारो॥

अर्थात् इसमें मेरा कुछ दोष नहीं क्योंकि आपको बुलाना मैं भूल गया अब आप कोप दूर कीजिये।

बागो निहाली पठै दैहों आजु,

भलें तुमको निहचै जीय धारो।

अर्थात् बाग (लिहाफ) निहाली (तोशक) आदि सेजा आज आपके वास्ते मैं भेजदूंगा अपने चित्त में निश्चय रखो।

छत्री सभै कृत विप्रण के,

इनहू पै कटाक्ष कृपा के निहारो ॥ १ ॥

समग्र क्षत्री ब्राह्मणों के किये हुये हैं अर्थात् उनकी कृपा से क्षत्रियों में बल है इनपर कृपादृष्टि से देखो कोप न करो भाव अपने आपसे है यानी गुरु साहिब कहते हैं मेरे पर कृपा रखो आपकी कृपा से देवी सिद्ध हुई है अब कोप उचित नहीं है।

जुद्ध जिते इनही के प्रसाद इनही के प्रसाद सुदान करे। अघे औघे टरे इनही के प्रसाद इनही की कृपा फुन धाम भरे॥ इनही के प्रसाद सु विद्या लई इनही की कृपा सभ शत्रु मरे। इनही की कृपा के सजे हम हैं नहीं मोसे गरीब

---

(१) प्रसाद = महरबानी ॥ (२) अघ = पाप = दुःख ॥ (३) औघ = समूह ॥ (४) टरे = दूरहुए ॥ (५) फुन = पुनः। (६) धाम = घर ॥ (७) सजे = बने ॥

करोर परे ॥ २ ॥ सेव करी इनही की भावत और की सेव सुहात न जी को ॥ दान दयो इनहीको भलो अरु आन को दान न लागत नीको[1] ॥ आगे फले इनही को दयो जग में जश और दयो सभ ही फीको[2] । मो गृह में तन ते मन ते शिर लउ धन है सभ ही इनही को ॥ ३ ॥

इन दोनों सवैयों के अर्थ तो स्पष्ट हैं परंतु इनमें ११ग्यारह वार (इनही) शब्द आया है इसमें झगड़ा है तत्व खालसा तो कहता है यह सिंहों की तरफ इशारा है प्राचीन धर्म्मी सिक्ख कहते हैं यह ब्राह्मणों की तरफ इशारा है जब गौर कियाजाता है तो वास्तव में यह सवैये ब्राह्मणों की ही स्तुति में हैं छत्री या सिंहों की स्तुति में नहीं क्योंकि पहिले सवैये की चौथी तुक में (छत्री सभै कृत विप्रण के इनहू पै कटाक्ष कृपा के निहारो) छत्री और विप्र दो शब्द आये हैं इनहू के शब्द से छत्रियों की तरफ इशारा करके केशवदास जी से क्षमा मांगी है उसके पश्चात दूसरे तीसरे सवैये में (इनही) के शब्द से विप्रण की तरफ इशारा करके उनकी स्तुति की है पाठ में छत्री विप्रण दो शब्द हैं इसकारण क्षत्रियों के वास्ते इनहू ब्राह्मणोंके वास्ते इनही भिन्न भिन्न दो शब्द लिखे

(१) नीको = भले ॥ (२) फीको = निरर्थक ॥

हैं यह असंभव बात है कि छात्रियों की तरफ कभी इनहू कभी इनही से इशारा कियाजाय इस में कोई अलंकार नहीं और छात्रियों की प्रशंसाका कोई कारण भी नहीं केशवदास जी ने छत्रियों की निंदा नहीं की जो गुरु साहिब उनकी स्तुति करते जैसे तत्वखालसा मूर्खता से समझ रहा है। छात्रिय शब्द अधीनगी के वास्ते सवैये में आया है फिर विना कारण छात्रियों की स्तुति कैसे वनसकती है और वह मौका केशव दास जी की क्षमा कराने का था न क्रुद्ध करने का यदि क्षत्रियों की स्तुति का अभिप्राय होता तो केशव दास जी और भी क्रुद्ध होजाते भोजन क्यों करते और गुरुसाहिव से यह असंभव वात थी कि ऐसे गुणी पंडित अपने दीवान भेजकर पहले बुलाये अपने पास वैठाये पहले सवैये में अत्यंत अधीनता करी फिर दूसरे तीसरे सवैये में उनके सामने और की स्तुति करके उनका अपमान कियाजाय और गुरु साहिव इन सवैयों में जो स्तुति करते हैं वह क्षत्रियों की कदापि नहीं होसक्ती ब्राह्मण उसके योग्य हैं नहीं तो वतायें गुरु दसम जी का विद्यागुरु कौन क्षत्री था और गुरु जीने किस क्षत्री की सेवा की थी और किस क्षत्री को दान दिया था इत्यादि। परन्तु ब्राह्मणों की निसवत सब वातें

घटित होती हैं नहीं तो पंडितजी से सवा साल हवन कराके यज्ञ के पश्चात उनको सवा लक्ष रुपैये क्यों दिये किसी क्षत्री वा तत्वखालसा को क्यों न मिले और पहिले सवैये की चौथी तुक में (क्षत्री सभै कृत विप्रण के) ऐसी विनती क्यों की है ? ।

एक ज्ञानी भाई साहिब ने यह अर्थ भी किये हैं कि इन में ब्राह्मणों साधुओं अभ्यागतों की प्रशंसा है जिनको पहिले भोजन कराने के कारण केशवदास कुपित हुये थे यद्यपि इन अर्थों से भी ब्राह्मणों की ही प्रशंसा सिद्ध होती है इसमें उन्होंने यह समझा कि इनही का इशारा विद्यमान पुरुषों की तरफ़ है जिनको पहले भोजन कराया था वास्तव में इशारा विप्रण शब्द की तरफ है विद्यमान की कुछ जरूरत नहीं और ग्रंथों में ऐसा बहुत होता है केचित् पुरुष कहते हैं यह दोनों सवैये सहजधारी और चरण पाहुलिये सिखों की स्तुति में हैं यह भी असंभव है क्योंकि सिक्खों का वहां कुछ जिक्र नहीं यदि कहें छत्रियों का जिकर है छत्री हम ही हैं इसका उत्तर यह है कि यदि यह बात होती तो (छत्री सभै कृत बिप्रण के इनहू पै कटाक्ष कृपा के निहारो) गुरुसाहिब क्यों कहते यदि यह माना भी जावे तो वह ब्राह्मणों के बनाये हुये हैं

फिर भी ब्राह्मणों की स्तुति सिद्ध हुई सिंह कहते हैं कि इन सवैयों में हम (सिंहों की वड़ाई) है वाह वाह खूब हजरत तत्त्वखालसा जी आप का तो जन्म ही एक साल पीछे केशवदास की कृपा से हुआ है आप पर किस प्रकार घटित होसक्ते हैं सं० १७५५ में केशव-दास जी ने भगवती सिद्ध कराई सं० १७५६ में सिंह उस शक्ति से रचेगये मित्रों ! फिर खालसा उनका चेला है गुरु चेले की ऐसी स्तुति करसक्ता है ? कदापि नहीं कृपा का शब्द वडों को कहते हैं विद्यागुरुओं से पढ़ते हैं न चेलों से। सिंहों की बुद्धि को क्या हुआ चेलों से गुरु वनने और उनसे दान लेने सेवा क-राने के अभिलाषी हैं और गुरुसाहिव अपने गुरू अकाल पुरुष के आगे प्रार्थना में लिखते हैं। जो मो को परमेश्वर उचरैं। ते सभ नर्क कुंड माहि पर हैं ॥ मित्रों ! जव गुरुसाहिव उस सिख को जो गुरु अकाल पुरुष के वरावर कहे नर्क वतलाते हैं तो खुद अपने सिखों को अपना गुरु मां बाप स्वामी दानपात्र आदि कैसे कहसक्ते थे ? कदापि नहीं और उत्तम पुरुष वात कहने वाले गुरु साहिव और मध्यम पुरुष जिनसे वात करते हैं केशवदास जी और प्रथम पुरुष विप्रण का शब्द है सिख या सिंह आदि कोई नहीं। यह केवल

भर्म या हठधर्मी है।

दोहा

चट पटाय चित में जरयो तृण ज्युं क्रुद्धित होय।
खोज रोज के हेत लग, दयो मिश्रजू रोय॥ ४॥

मिश्रजू (केशवदास जी) पिछले दोनो सवैये सुनकर शीघ्रही क्रोधित होगये और कोपाग्नि से चित्त में तृण की सदृश जलने लगे और रोजी के खोज में लगकर रोपड़े अर्थात् शोकित होगये इस दोहरे और अर्थों पर तत्वखालसा का सारा घमंड है और कहते हैं कि यदि उक्त सवैयों में गुरु साहिव खालसा को दान देने के बास्ते न कहते और उनकी स्तुति न करते तो पंडितजी क्यों दुःखित होते इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि--सवैयों में सिंहो के वास्ते दान पुजा की आज्ञा है यह अनुमान उनका निंदनीय है बास्तव में पंडित जी के शोकित होने का यह कारण था कि जव गुरुसाहिव ने उनको सवैयों में लेफ तुलाई देने के वास्ते कहकर वाकी शुष्क प्रशंसा करदी सवा लक्ष रुपैये का कुछ जिकर न किया तो वह घवड़ागये। कि सवा साल धोखा देकर हम से जप पाठ करा कर भगवती सिद्ध करालई अब क्या दिवाल है।

इसी कारण पहिले न बुलाये यदि हम और किसी वास्ते ऐसा यत्न करते तो खबर है कितना द्रव्य मिलता यदि यह सबब न होता तो पंडितजी सिखों आदि की प्रशंसा या दान देने से क्यों घबराते ?। क्या तमाम जहान में गुरुसाहिब ही दानी थे ? जो उनके दिये बगैर ब्राह्मण भूखे मरजाते खासकर ऐसे प्रतापी जिनके देवता वश हों उनको केवल रंज आज्ञा भंग और सवा साल प्रयोग कराकर प्रण तोड़ने का था जब गुरुसाहिब ने उनका अभिप्राय जाना तो उसी वक्त डरकर आदर सहित सवा लक्ष रुपैये पूजा के दिये के ऐसा न हो कोप होकर और कुछ कर दें अर्थात् शाप दे दें ॥ यथा ॥

सादर बहुर अहार खवैया॥ दच्छणा लक्ख सवा रुपैया॥ दरव पठयो सभ अपने धामा । रहयो कुछक गुरुढिग विश्रामा ॥ पुन वर लैवे हेत उच्चारा । श्री गुरुजी होय पंथ तुमारा ॥ करै जंग तुरकन को मारै । विजै पाय सभ वस्त संभारै ॥ सूर्य्यप्रकाश ॥

इस दोहरे में एक और बड़ा भारी संदेह होता है कि पहले दो सवैयो में तो गुरुसाहिब उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष केशवदास जी हैं। परंतु इस दोहरे में केशवदास मध्यम पुरुष नहीं होसक्ते यदि कहो सिख

हैं तो सिखों का कहां जिकर है। इस कारण यह दोहरा किसी अन्य मौके का है इस स्थल का नहीं वरना कोई ज्ञानी सिंह इसकी व्यवस्था बनाकर दिखलाये। एक अज्ञानी ने दो गुटके गुरुमतसुधाकर गुरुमतप्रभाकर बनाकर उनमें इन सवैयों के अनोखे अर्थ किये हैं सो उनका लेख भाईजी और अपना लेख उत्तर रूप से लिखाजाता है-

॥ भाईजी ॥ जब दशम गुरुजी ने केशवदास पंडित का पोल जाहिर किया और पंथ को सत्य उपदेश देकर ब्राह्मणों के जाल से निकासा और खालसे को वह सामग्री जिसके ब्राह्मण अभिलाखी थे बांट दी ॥ उत्तर ॥ इसमें कोई प्रमाण नहीं लिखा अतएव सर्वथा कपोलकल्पित है। गुरुसाहिबने केशवदासजी को काशीजी से बुलाकर लाखों रुपैये जप अनुष्ठान पर सबासाल तक खरच करके देवी के दर्शन किये। अंतमें बड़ी स्तुति और खातर करके सवा लक्ष दक्षिणा देकर बिदा किये। इसका प्रमाण यह है-एक बार गुरु जी से माता ने पूछा कि बेटा पिता आपके परलोक सिधार गये, मैंने आपका सुख नहीं देखा आप बोलते क्यों नहीं शरीक कहते हैं कालियुग में देवी की आराधना की है इस कारण सुन्न समाध होगये हैं। तिस पर माता को एकांत में लेजाकर कहने लगे यद्यपि देवता की बात गोपनीय है परंतु आपके हठ

से सुनाता हूं ।

दोहरा

जब उठे हम पाउंटे, खोजे सभ अस्थान ।
जग्यो चित्त पूजै तिसै, तुरत होय पवमान ॥

तवै बुलाबा केशोदास । काशी बाली सारसुत भाष ॥ तुरक तुरत मारो विध ऐसी । नैनू पुत्री सेवहि बैसी ॥ पुष्य गुरू नंदा तिथि अंत । होय अराधन घरा नमिंत ॥ उण उण मुण मुण गुण गुण रुण रुण । सोला अंक जाप कियो, धुण झुण ॥ जाम एक दिन घड़ियां चार । जगमग परवत झमके पहार ॥ मीच नैन उठ हूआ ठाडा । निरखी एक वार मुखराडा ॥ तुमही तुमही बचन प्रकाशा । धर्म साच भयो आज निकाशा ॥ बोली हसत भीच गरजानी । पंथ सकेश दिया उर मानी ॥ शस्त्र छुरी लेह एह मेरा । जल भिठ फिर वपु साव तवेरा । गये देव गण मण मो डलटी ॥ जगत रीत सभ ता दिन छुटकी ॥ कछुक अंतरा माता सो राखा । नहीं पूछो देवी यह भाखा ॥ आया भोर वा दिन दिज केशव । हाथ जोड़ बोलो सभ से सव ॥ देवकृपा मम तुम प्रसाद । दियो मंत्र कुलगुरु मुहि आद ॥ सवा लाख देऊंगा धना । इह कहि मेलयो अंगन घना ॥ जाहि हम तहि तुम ऐसी बनी । सभ ही तुमरो रच्छक गुनी ॥

साखी पादशाही १० पूर्वार्ध अंक ॥ १७ ॥

मित्रो ? गुरु साहिब माताजी से कहते हैं कि हमने पाँउटे से चलकर सभ स्थान देखतेहुये ख्याल किया कि हम उस देवता की पूजा करैं जो तुरत प्रकट होवे यह विचार कर केशवदास काशीजी के वासी सारस्वत को बुलाया और नैना देवी के सिद्ध करने की तजवीज की और मंत्र का जाप शुरू किया। दुर्गा प्रकट हुई एक करद हमको देकर खालसा पंथ होने का वर दिया और फिर अंतर्धान हुई। हे माता जी उस रोज से जगरीत हम से छूटगई। केशवदास जी से हमने कहा हे देवता मैंने आपकी कृपासे आप के मंत्र से कारज सिद्ध किया सवा लाख रुपैया मैं अभी आप को देता हूं ऐसा कहकर केशवदास को हमने अपनी छाती से लगालिया और कहा कि–हे केशवदास जहाँ हम वहां तुम और सभ आपके रक्षक हैं।

अब तत्वखालसा जी वतायें किस की पोल खुली केशवदास की अथवा झूठ बोलनेवालों की ? पंथ एक साल पीछे हुआ है सत्य उपदेश किसको किया था ? और यदि ब्राह्मणों के जाल से निकालते तो गुरुसाहिव यह न कहते (छत्री सभै कृत विप्रण के इनहू पै कटाक्ष कृपा के निहारो) सच वोलो, झूठ में प्रतिष्ठा नहीं।

॥ भाईजी ॥ तव केशवदास को वड़ा रंज हुआ ! गुरु साहिव को उपालंभ दिये । उस समय गुरुजी ने केशव दास को सम्बोधन करके यह सवैये कहे हैं ॥

॥ उत्तर ॥ सामग्री बांटी नहीं गई वाल्कि उस से यज्ञ समाप्त हुआ है । केशवदास को वृथा क्यों रंज होना था ? उनके रंज का कारण पहिले लिखा गया है, जिस के वास्ते गुरुसाहिव ने अपनी भूल अंगीकार करके क्षमा मांगी थी ॥ यथा-(मेरो कछु अपराध नहीं गयो याद ते भूल न कोप चितारो) देखो पंडितजी के उपालंभ को सहन करके गुरुसाहिव कैसी अधीनगी से क्षमा कराते हैं । आप विना पानी मौज़े खोलते हैं । पाप के समुद्र में डूबोगे।

॥ भाई जी ॥ वहुत अज्ञानी भाई जी इन सवैयों को ब्राह्मणों के पक्षमें लगाते हैं, परंतु वह यथार्थ नहीं है ।

॥ उत्तर ॥ गुरु के प्यारे सच्चे भाई जी तो इन को ब्राह्मणों के ही पक्ष में लगायेंगे । वास्तव में यथार्थ भी यही है परंतु जो अपने लोभ लालच (मज़े उड़ाने) के वास्ते दान लेने और लोगों को मीठी मीठी धोखे की वातें सुनाकर लूटना चाहते हैं वह मूर्खों के सामने सिंहों के पक्ष में लगाते हैं जो समग्र झूंठ का पुञ्ज है ॥

॥ भाईजी ॥ केशवदास अथवा कपोलकल्पित कथनानुसार किसी और नाम के पंडित ने जब यह देखा।

॥ उत्तर ॥ तत्त्व खालसा को अपनी प्राचीन पुस्तकें यथा दशम ग्रंथ साहिब सूर्यप्रकाश गुरविलास जन्मसाखी आदि समग्र ही कपोलकल्पित प्रतीत होती हैं। केवल ज्ञानसिंह ज्ञानी अथवा दत्तसिंह लाहौरी आदि की मनगढ़त गाथायें भाती हैं जिन में लेशमात्र भी सत्य नहीं। केशवदास जी का नाम सर्व सूर्यप्रकाशादि ग्रंथों में लिखा है परंतु तत्त्वखालसा वज्र की समान समझ कर उस से भागता है।

॥ भाईजी ॥ मेरो कछु अपराध नहीं गयो याद ते भूल न कोप चितारो। अर्थात् आपको कुछ न मिलने से मेरा अपराध नहीं किन्तु आपकी प्रारब्ध और कायर होकर भागने की करतूत तथा छल से प्रपंच रचने का ही दोष है और इसी कारण से आपको कुछ देना मेरे याद नहीं रहा। इससे स्पष्ट है कि गुरु साहिब ने उसको मन से भुला दिया था। यदि उस के साथ मन का प्रेम होता तो सबसे पहिले याद करते।

॥ उत्तर ॥ देखो गुरु साहिब ने तो केशवदास जी को बड़ी प्रार्थना से काशी जी से बुलाकर उनकी कृपासे भगवती सिद्ध करके खालसा पंथ चलाया। जिस से

वाजे प्रपंची मुफ्तखोरे भाई जी मजे लूटते हैं । उनको यह अशुद्ध आचरण मूरख भाई जी कायर प्रपंची छली वताता है। इससे अधिक कृतघ्नता क्या होगी ?। कायर होकर केशवदास जी का भागना सर्वथा झूठ है ॥ यथा ॥ जव गुरु जी ने उनको दुर्गाप्रसिद्ध के हेत कहा तो केशवदास जी ने पहिले ही कह दिया था यथा—

केशव कह्यो विधान करै हो ॥ लाख दरव की दक्षिणा लै हो ॥ ५ ॥ विदत होत कैधों हुई नाही । इह सव शकत आपके पाही ॥ ६ ॥ इस माहि भला वुरा जो कर्म ॥ सर्व तुमारे कर विन भरम ॥ ७ ॥ मैं तो हवन करावन पर हों ॥ विधी वतावन क्रम ते कर हों॥सूर्य्यप्रकाश। रुत्त ३ अध्याय॥६॥ जवकेशवदास ने पहिले ही इसी कारण प्रण कर लियाथा तो फिर गुरु जी क्यों असप्रन्न होते थे वल्कि अत्यन्त प्रसन्न रहे । यथा—जव दुर्गा प्रत्यक्ष होकर वरदान देकर अन्तर ध्यान होगई तो वह किसी से नहीं वोले सव से प्रथम पंडित जी ने ही वृतान्त पूछा। गुरु जी ने क्रमानुसार समग्र हाल सुनाकर यह कहा ॥—

विप्र तुमारी करुणा पाई ॥ कारज सिद्ध भये समुदाई ॥ दूसरी जगे यह कहा है ॥ कह्यो तिसै तव करुणा

पाई । जथा मंत्रविध दई सिखाई ॥ ३४ ॥ भई विदत पाछे वर दयो । कारज शकल संपूर्ण भयो ॥ ३५ । सवालाख अब दै हो धन को । इमि कहि मेल्यो अपने तन को ॥ ३६ ॥ जिस थल होवहि वास हमारा । दयो तिसी थल वास तुमारा ॥ गुरुप्रतापसूर्य ॥ अध्याय ३९ रुत्त ३

अर्थात् गुरुसाहिव ने केशवदास जी को दुर्गा प्रगट होने के पश्चात् अपनी छाती से लगाकर कहा, कि-- जिस जगे हमारा निवास होवेगा वहाँ ही तुम्हारा होगा ।

अब मनसुखि भाई जी बिचारें कायर प्रपंची छली कौन सिद्ध हुआ, केशवदास जी अथवा ब्राह्मणों का निंदक ? यदि पंडित जी को दिल से भुला देते तो श्री- मुख से यह न कहते (गयो याद ते भूल न कोप चितारो) और प्रारब्ध का नाम न लेते । यदि कहो दिल से भुला- दिये थे परंतु मुख से कहदिया है इस में निफाक का दोष गुरुसाहिव पर आता है जो उनसे अत्यंत असं- म्भव है । केशवदास को गुरुसाहिव ने कायर नहीं कहा परंतु कुछक सिंहों को अवश्य यह पदवी दी है ॥ मूत्र डार तिन शीस मुड़ाये ॥ दसम ग्रंथ साहिव बचित्र नाटक अ० १३ अंक १८ ॥

॥ भाई जी ॥ तुमारे को परदेशी और द्वारपर आये समझ कर पुशाक निहाली भेज दूंगा ।

॥ उत्तर ॥ गुरुजी ने पंडितजी को हजारों रुपैये खर्च के काशीपुरी से बुलाया लाखों रुपैये खर्च करके हवन पाठ कराया। जब वह क्रोध होगये तो नंदचन्द दीवान उनके बुलाने के वास्ते भेजे उन्होंने क्रोध होकर कहा जाओ अपने गुरु से कहदो हम नहीं आते। यथा (विप्र कह्यो अब हौं नहीं जाबों) फिर खुशामद करके लाये आदर किया, भोजन कराया सवा लक्ष दक्षिणा के दिये परंतु यह मनमुखि उनको परदेशी भिखारी लिखता है इसका यही उत्तर है कि--(अंधे अकली बाहरे क्या तिनसों कहिये)

॥ भाई जी ॥ छत्री सभै कृत विपन के इनहू पै कटाक्ष कृपा के निहारो।

॥ उत्तर ॥ इस तुक के अनोखे अर्थ गढ़े हैं अर्थात् क्षत्री सभै कृत विपन के ॥ इसको एक भाग बतला कर केशवदास का बचन ठहराया। इनहूं पै कटाक्ष कृपा के निहारो ॥ इस को दूसरा भाग कहकर गुरु साहिब का वचन लिखा है ॥ शुद्ध अर्थ इसके हम पहिले लिख चुके हैं। अब भाई जी की टीका यह है। सम्पूर्ण क्षत्री ब्राह्मणों के ही कीर्त्तिमान प्रशंसित किये हुये हैं। अगर क्षत्रियों की कीर्त्ति ब्राह्मणों द्वारा न होती तो उनको संसार में कोई भी न जानता। ब्राह्मण

के ऐसे कथन पर गुरु साहिब कहते हैं, कि ऐमिश्रजी ऐसी कीर्त्ति करने से आप इन पर तो कृपादृष्टि ही रखें यह व्यंगवाक्य है जिसका भाव यह है अलम् । दशम ग्रंथसाहिब में लिखा है और यह महात्मा भी पहिले मानचुके हैं के यह सवैये श्रीमुख वाक्य हैं, यथा गुरुसाहिब ने केशवदास को सम्बोधन करके यह सवैये कहे हैं। इस जगे आधी तुक केशवदास की बनादी, ऐसी बुद्धि पर शोक क्यों न कियाजाय ? । टीका में कीर्त्तिमान आदि बहुत पाठ आप लिखकर प्रश्न उत्तर ठहरादिया, जब नंदचंद दीवान पंडितजी को क्षमा कराकर गुरुजी के पास लाये थे तब गुरुसाहिब आपही उनकी स्तुति करके माफी मांगते रहे। पंडितजी कुछ भी नहीं बोले फिर प्रश्ण क्योंकर हो सका है। पहिले सवैये की तीनों तुकों में जब गुरु नम्रता कर रहे थे तो पंडित जी को इस चौथी तुक में विना कारण ताना मारने की क्या जरूरत थी। यदि यह आधी तुक वह कहते तो विप्रण का शब्द न होता, बल्कि यों होता (क्षत्रि सभै कृत हैं हमरे) (विप्रण) के शब्द से गुरु साहिब का ही कथन सिद्ध होता है और आश्चर्य्य यह है कि सवैये की तीन तुकें पहिले गुरु साहिब ने कहीं चौथी तुक का अर्द्ध भाग पंडित जी ने कहा, आधा फिर

गुरुजी ने, इस से तो यह सिद्ध हुआ कि वहाँ समस्या-पूर्ति हो रही थी दोनों महात्मा बुद्धिबल दिखा रहे थे। शोक शोक इस चंचलता पर। महात्मा जी आपके मंतव्य अर्थों में इनहू का इशारा किन की तरफ होगा? पहिला क्षत्रि शब्द तो प्रश्न में आचुका अब इनहू कौन रहे अंगरेजी या संस्कृत रीति से सिद्ध करके दिखलाओ और जो आप टीका करते हैं (सम्पूर्ण क्षत्री ब्राह्मणों के ही कीर्तिमान (प्रंशासित) किये हुये हैं) यह भी वृथा कपोलकल्पना है। क्षत्री अपने भुजबल और प्रताप से प्रशंसित होते हैं केवल ब्राह्मणों की प्रशंसा से कुछ नहीं होता, न ब्राह्मण किसी की झूठी प्रशंसा करें, न मुख से ऐसा वाक्य कहैं। यह तो बाजे दंभी पुरुषों का काम होता है जो अपने स्वार्थवश किसी की निंदा किसी की स्तुति करके अपने कुनके प्रसाद की ठहरालें। इस तुक में व्यंग्योक्ति भी कुछ नहीं। यह केवल वादी की बुद्धि की व्यंगता है।

॥भाईजी॥ कि जिस झूठी कीर्ति से मोहित होकर भारत-वासी खत्री अपना सरवंश नाश करके दरिद्री होगये हैं।

॥उत्तर॥ यह गुरुवाणी की टीका नहींहै, बल्कि अपने ईर्षा भरे हृदयकी तप्त बुझाकर ब्राह्मणों को गुरुदक्षिणा दीजाती है, क्षत्री राजा जब ब्राह्मणों के आज्ञाकारी रहे अटल राज्य करते रहे परंतु जब से प्रपंची दंभी पुरुषों (सूरत

मोमनों करतूतकाफिरों) से मेल जोल करने लग गये तब से उनपर दरिद्रता आगई है । इस के दृष्टान्त बहुत हैं । भला कोई यह तो बताये कि जो लोग ब्राह्मणों की छाया से भी डरते हैं वह इस समय अपने बड़े बड़े अधिकारों से अधोगति को पहुँचकर दरिद्रता को क्यों प्राप्त होगये हैं और दर दर क्यों फिरते हैं। भाईसाहिब यह तो कर्मों का फल है ब्राह्मण विचारों को क्यों कोसते हो,ब्राह्मणों ने समग्र विद्या प्रकट करी हैं और सारे जहान ने उनसे सीखी हैं आपके ग्रंथ साहिबादि में भी ब्राह्मणों का ही चून पून है।जयदेव सूरदास वेणी रामानन्दादि२५ब्राह्मण ही हैं, नहीं तो आपही बताइये किसी भाई जी ने भी कोई नयी विद्या बनायी है बल्कि तरजुमे करके गड़बड़ जरूर कर दी है ।

॥ भाई जी ॥ आप इन सिखों पर कोप से न देखें नहीं तो दूसरे प्रकार की दक्षिणा मिलेगी ।

॥उत्तर॥ वाह वाह यह गुरुवाणी का अर्थ है अथवा अपनी कुटिलता का अनर्थ है। गुरु साहिब जैसे सत्पुरुष तो ऐसे कटुवाक्य किसी अधम पुरुष को भी नहीं कहा करते थे, पंडित जी ने तो उनपर ऐसी कृपा की थी जिसका धन्य वाद भी गुरुसाहिब से न होसका उनको कब कह सक्तेथे। दूसरे प्रकार की पूजा तो कृतघ्न भृत्यों की हुआ करती

है। जो अपने स्वामी के अनुग्रह से भिखारी से धनाढय बनकर बड़े बड़े अधिकार पाकर फिर भी कृतघ्नता करते हैं। पिता पुत्रादि में भेद डालकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। स्वामी की इच्छा के विरुद्ध स्वेच्छा चाल से राज्य और प्रजा में उपद्रव उत्पन्न करते हैं। स्वामी के किंचित क्रोध से जलकर अन्य राज्य का आश्रय लेके उसीके सन्मुख हो कर चिड़ाते हैं और रात्रिदिन अन्नदाता के भयभीतार्थ देशांतर में रटते हैं। ऐसे मनमुखि पुरुषों की पूजा दूसरी तीसरी प्रकार की होती है। उनको दरबार में बैठने की आज्ञा नहीं होती। जूतियों की जगे फरश से बाहर खड़े किये जाते हैं। बुरा भला कहा जाता है जिला वतन किये जाते हैं। अन्य राज्यों में उनकी कुचालें प्रकट की जाती हैं। फिर स्वामी उनको मुह नहीं लगाता। निरादर फिरते हैं। यह राज्यनीति का वचन है। सो केशवदास जी उन के पूज्य थे, पूज्यों को ऐसा कठोर वाक्य वाहगुरु के प्यारे कदापि नहीं कहा करते, यह कुत्सित पुरुषों का स्वभाव है।

॥भाई जी॥ इन सवैयों में गुरु साहिब उत्तम पुरुष मिश्रजू, मध्यम पुरुष (इनहू या इनही खालसा) अन्य पुरुष हैं।

॥ उत्तर ॥ अन्य पुरुष की जगे प्रथम पुरुष योग्य था, यह अज्ञता का कारण है इस के विरुद्ध (हम हिंदू

नहीं) इस गुटके के पृष्ठ ४५ पंक्ति ८ में लिखा है यथा—

आप यदि व्याकरणी हों तो शीघ्र ज्ञात होजावेगा कि इन सवैयों में गुरु साहिब प्रथम पुरुष पंडित जी द्वितीय पुरुष, गुरु के सिख तृतीय पुरुष हैं।

भाई जी! वैय्याकरणी कैसा ही कोई पंडित हो परन्तु आपकी इस गन्धर्व भाषा को कदापि न समझेगा, आपही कृपादृष्टि से बताइये प्रथम द्वितीय तृतीय पुरुष किस व्याकरण की पुस्तक में लिखा है। यह तो अंगरेजी संकेत है। व्याकरण का नाम लेकर (खून लगाकर शहीद बनने की इच्छा है)·भला अगर किसी में है तो यहां उत्तम मध्यम अन्य पुरुष क्यों लिखा है। अब दूसरे प्रकार की पूजा किस की योग्य है। यहां तक भाई जी की व्याकरण विद्या का प्रकाश हुआ है। अब सुनिये उत्तम मध्यम पुरुष ठीक गुरुजी और पंडित जी हैं परन्तु प्रथम पुरुष खालसा कदापि नहीं होसक्ता। इनहू का इशारा छत्रियों पर है। इनही से विप्रण की तरफ इशारा है। जो पाठ में पुरोवर्ती हैं खालसा का तो इस प्रकर्ण में किसी जगे नाम तक भी नहीं आया और न अभी तक पंज प्यारों की परीक्षा हुई। न अभीतक अमृत प्रचालित हुआ। न खालसा पंथ बना। फिर इनही शब्द से खालसा की तरफ

इशारा समझना कैसा बुद्धि का भ्रम है। अगर गुरु साहिब दान के अधिकारी सिंहों को बनाते तो फिर यह वाक्य (खालसा सो जो लइ न दान) क्यों कहते और इन सवैयों में पंडित जी से ऐसा क्यों फरमाते (गयो याद ते भूल न कोप चितारो) इन सवैयों के पश्चात् उसी वक्त बड़े आदर सत्कार से पंडित जी को भोजन कराकर सवा लक्ष रुपया यज्ञ की दक्षिणा का दिया॥ विचार का स्थान है कि यदि सवैयों में सिंहों को दान का अधिकारी फरमा देते तो फिर उसी वक्त किस प्रकार केशवदास जी को भोजन कराकर इतना द्रव्य देते। सज्जन पुरुषों का कहना और करना एक होता है।

॥ भाई जी ॥ अघ दुःख।

॥ उत्तर ॥ दुःख और पाप दो अर्थ हैं कोई अर्थ ले लो ब्राह्मणों पर ही घटेंगे।

॥ भाई जी ॥ (इनही की कृपा के सजे हम हैं नहीं मो से गरीब करोर परे) अर्थात् खालसे को अपना स्वरूप समझ कर ऐसा कहा है।

॥उत्तर॥ जब खालसा ही उस वक्त तक उत्पन्न न हुआ था तो किस तरह यह कथन सत्य होसक्ता है। यह सर्वथा विरुद्ध है, कि जो पुरुष उत्पन्न

न हुआ हो उसको अपना स्वरूप कहाजाय। यदि आप के कथनानुसार यह भी माना जावे तौ भी असम्भ है। क्योंकि जब गुरुसाहिबने खालसे को अपना रूप जानलिया तो आप उस से भिन्न न हुये। फिर दूसरे तीसरे सवैये में ११ वार इनही का शब्द क्यों कहागया। जब खालसा और गुरु एकरूप हैं तो यह क्यों कहा। इनही की कृपा से जुद्ध जीते, इन्ही की कृपा से अच्छे अच्छे दान करे, इनही की कृपा से पाप दूर हुये, इत्यादि। इनही का शब्द दूसरे के वास्ते कहाजाता है। अपने रूप के वास्ते नहीं बोला जाता। सेवक स्वामी दानी भिखारी आदि भिन्न भिन्न होते हैं। अपना रूप कैसे बन सक्ते हैं। और गुरुजी अपने शिष्योंको अपनास्वामी, आपको सेवक, उनको सजाने वाले, आप सजनेवाले, उनको दानलेनेवाले, आप देनेवाले, उनकोयुद्ध जितानेवाले, आप जीतने वाले इत्यादि क्यों कहते। यह सारे दोष बतारहे हैं, कि यह सवैये खालसा के वास्ते नहीं ब्रह्मणो की प्रशंसा में हैं। वास्तव में सिखों के वास्ते गुरु साहिब का यह हुकम है (गुरु किहा सो कार कमावो। गुर की करनी काहे धावो) अब बताइये गुरुजी आप जब यह हुकम देचुके तो फिर उस से विरुद्ध यहां शिष्यों को ऐसा क्यों कर कह सक्ते थे। यह सर्वथा अनुचित है।

अब हम सवैयों का अर्थ यथोचित यौक्तिक करके तत्व खालसा की पोल खोल चुके पंरतु किंचित और प्रमाण भी पाठक गणों की दृढ़तार्थ लिखते हैं । जिससे सम्यक ज्ञान हो जावे कि गुरुमत में दान के अधिकारी केवल ब्राह्मण ही हैं और कोई नहीं । यथा—

छप्पै छंद

द्विजन दीजियहु दान दुरजन कहु दिष्ट दिखैयहु । सुखी राखियहु साथ शस्त्र सिर खड़ग बजैयहु । बिचित्र नाटक चारित्र ॥२१॥ अंक॥५८॥जब रूपकौर ने गुरु साहिब को अपने मकान में घेरकर भोग करने के वास्ते कहा तो उन्होंने कहा हमारा व्याभिचार धर्म नहीं हम क्षत्री हैं । ब्राह्मणों को दान देते हैं दुष्ट पुरुषों को डराते हैं शत्रुओं के सिर खड़ग बजाते हैं परास्त्रिया की सेज पर पैर नहीं धरते । यहां से भी दानपात्र ब्राह्मण ही ठहरे । तत्व खालसा कहता है 'द्विज न दीयहु दान' अर्थात् ब्राह्मणों को हम दान नहीं देते यह अर्थ है । वाह वाह द्विजन में नकार बहुबचन का चिन्ह है । भिन्न अक्षर नहीं । यथा—

शस्त्रन मारत आप लरत हैं । को गुनाह सिक्खन अस करयो ॥ तिम हम सिख पुत्रन किस भांती । इन तीनों तुकों में नकार विप्रन की सदृश बहुवचन के वास्ते है अथवा नहीं हठधर्म्म का पड़दा आंखों से दूरकरो पूर्व

की बोली में नकार वहु वचन के वास्ते आता है और गुरु भाषा वाहुल्यता करके पूर्वी जवान में है क्योंकि पटने का जन्म है दूसरे गुरुसाहिव रूपकौर को अपना धर्म सुनाते और अपनी वड़ाई करते हैं सो दान न देना वड़ाई नहीं होती यदि छिजन में नकार भिन्न है तो दुर्जन में भी भिन्न होगा इससे भिन्न और प्रमाण सुनिये खत्री को दान लेना पाप बतलाया है यथा ॥

खत्री सो जो कर्मां का शूरु॥ पुन्नदान का करै शरीरु।खेत पछाणे वीजे दान। सो खत्री दरगह परवान ॥ लब्ब लोभ जो कूड़ कमावै ॥ अपना कीता आपे पावै ॥ आद० श्लोक १७ वारांते वधीक महल्ला १ ॥

(नोट)

गोबिंदसिंह जी अपनेआप को जन्मसे खत्री का पुत्र मान श्रीभगवान कृष्णचन्द्र से बर मांगते हैं। दसम ग्रंथ साहिव में जिसको गुरुमतप्रभाकर का रचता पृष्ठ १८३ पर स्वीकार करता है ॥ यथा

छत्री को पूतहूं वामन को नहीं कै तप आवतहै जु करो। अर और जंजार जितो गृहको तुहि त्याग कहा चित तामैं धरो ॥ अब रीझ कै देहु वहै हमको जोऊ हो बिनती कर जोर करो ॥ जब आव की औध निदान बनै अतही रन मैं तब जूझ मरो ॥

मित्रो अब विचारसक्के हो कि गुरु १० अपने को क्षत्री का पुत्र मानते हैं और खालसा उन के बनावटी पुत्र हुये तो फिर उक्त सवैयों में दान का हुकम खालसा को कब देसक्के थे। यदि हुकम है तो उक्त आद ग्रंथ साहिब का हुकम मनसूख होजावैगा और गुरु गोविंद सिंह जी पर विरुद्धता के दोष में कलंक आवेगा गुरुमत में दसों गुरु एक रूप मानेजाते हैं॥ यथा॥

॥ नानक अंगद को वपु धरा॥ धर्म्म[१] प्रचुर इह जगमों करा॥ अमरदास पुन नाम कहायो॥ जन दीपक ते दीप जगायो॥ ७॥ जब वरदान समै वहु आवा॥ रामदास तब गुरु कहावा॥ तिह बरदान पुरातन दीआ॥ अमरदास सुरपुर मग लीया॥ ८॥ श्री नानक अंगद करमाना॥ अंगद अमरदास पहिचाना॥ अमरदास रामदास कहायो॥ साधन लखा मूड़ नहि-

---

(१) गुरु दसम जी हुकम करते हैं उक्त बचित्र नाटक अध्याय ६ कवता अंक ४२ धर्म्मरक्षार्थ गुरु तेगबहादुरजी भेजे॥ यथा —हम इह काज जगत सों आए॥ धर्म्महेत गुरदेव पठाए॥ (नोट)श्रीगुरु तेगबहादुर का धर्म्म गुरु दसम जी तिकल यज्ञोपवीत हिन्दुओं केसा कथन करते हैं॥यथा॥ तिलक जन्जू राखा प्रभुता का। किजो वडो कलू महि साका॥ साधन हेत इति जिन करी। सीस दीआ पर सी न उचरी॥उक्त बचित्र नाटक अ०५ कवता अंक १३

पायो ॥ ९ ॥ इत्यादि श्री मुखवाक पादशाही १० दशम ग्रंथसाहिब बचित्र नाटक अध्याय ५ कबता अंक ६ से ९ तक ॥

श्रीगुरु तेगबहादर जी ने तीर्थयात्रा करते हुये ब्राह्मणों को दान दिया जिसके प्रताप से गुरुसाहिब का जन्म हुआ, जिसको श्रीगोविंदसिंह जी स्वीकार करके बचित्र नाटक में फरमाते हैं जिस से खालसा जी भी विरुद्ध नहीं होसक्के। क्योंकि खालसा पंथ रचने का हुकम भी उक्त बचित्र नाटक अध्याय॥ ६ ॥ अंक ३० में ही है ॥ उसी पुस्तक में गुरुसाहिब का दान के प्रताप से अपना जन्म होना लिखा है ॥ यथा ॥

॥ अथ कविजन्मकथनम् ॥

॥चौपई॥

मुरपित पूर्व कीयसि पयाना। भांति भांति के तीर्थ न्हाना ॥ जबही जात त्रिवेणी भए। पुन्नदान दिन करत बितए ॥ १ ॥ तही प्रकाश हमारा भयो। पटना शहिर बिखै भव लयो ॥ मद्र देश हमको लै आए। भांति भांति दाइअन दुलराए ॥ २ ॥ कीनी अनिक भांत की रच्छा। दीनी भांति भांति की सिच्छा॥ जब हम धर्म कर्म मों आए। देवलोक तब पिता सिधाए ॥ ३ ॥ दशम ग्रंथसाहिब में बचित्रनाटक

अध्याय ॥ ७ ॥ अंक १ से ३ तक ॥

(नोट)

मित्रों! जव दसों गुरु एकरूप हैं तो श्री गुरुतेग वहादुर जी का दान ब्राह्मणों को देना दसों गुरुसाहिवों का ब्राह्मणों को दान देना सावित होता है। फिर उक्त सवैयों में ब्राह्मणों से भिन्न खालसा को क्यों कर दानका अधिकार होसक्ता है। नवीन खालसा को शर्म होनी चाहिये ॥ नहीं तो उक्त शब्द ग्रंथ से निकाल दें ॥

श्रीगुरु दसम जी दान के प्रभाव को भली प्रकार जानते हैं। जो दान को और दान करनेवालों को नमस्कार करते हैं॥ जापजी कवता अंक ५६ में। यथा-
"नमो दान दान,, और अकाल स्तुति कवता अंक १३२ से १३४ तक दान की श्रेष्ठता आत्मा परमात्मा से प्रार्थना पूर्वक पूछते हैं॥ यथा—

इक राजधर्म्म। इक धर्म्म दान ॥
इक भोगधर्म्म। इक मोछवान ॥
तुम कहो चतुर चत्रे विचार।
जे त्रिकाल भए जुग अपार ॥
वरनन करौ तुम प्रथम दान।
सतजुग कर्म गुरू दान दंत।

भुमादि दान किने अनंत ॥

और गुरूसाहिब राजा बल से ईश्वर ने दान लेना ब्राह्मण के रूप मे हीं लिखा है ॥ देखो पादसाही दसम ग्रंथ अष्टम अवतार कबता अंक ४ से ६ और १६ =

सरूप छोट धारकै । चल्यो
तहाँ बिचारकै । सभा नरेस
जानियो। तही सुपाठ ठानियो ॥
सुवेद चार उचारकै। सुणियो
न्रिप सुधारकै ॥ पादार्घ दीप
दान दै। प्रदछना अनेक कै ॥
न्रिपवर दान सुसाही लई ।
दान समे दिजवर को दई ॥

(नोट)

मित्रो गुरूसाहिब दान का प्रभाव जानते हैं। यहां तक कि वाहिगुरू (ईश्वर) ने भी दान ब्राह्मण का स्वरूप धारकर लिया। तो फिर ब्राह्मणों से भिन्न सिंहों को दानका हुकम कैसे देसके थे ? ।

गुरू दसम जो दसम ग्रंथसाहिब निहकलंक अवतार में कलजुगी जीवों का लक्षण वर्नन करते हैं जो ऐसे पापी पुरुष कदापि ब्राह्मणों को दान न देंगे और साधुओं की सेवा न करेंगे ॥ यथा—

सुता पिता तन रमत निसंगा।
भगनी भरत भ्रात कह अंगा॥
भ्रात बहन तन करत बिहारा।
स्त्री तजी सकल संसारा॥
संकर वर्ण प्रजा सभ होई।
छत्री जगत न देखीए कोई॥
एक एक ऐसो मत कै है।
जाते प्राप्त सूद्रता हुइ है॥
हिन्दू तुर्क मत दुहूं प्रहर कर।
चलहैं भिन्न भिन्न मत घर घर॥

इत्यादि से आगै

(१) मुख वेद और कतेबको कोई नाम लेन न देंहगे।
किसहून कौडी पुंनकै कब हूं न देंहगे ॥ २४ ॥
(२) लाज को छोर है। दान मुख मोर है ॥ ३३ ॥
(३) किसू न दान दोहिंगे॥ सुसाध लूट लेहिंगे॥ ३८ ॥

तत्व खालसा को यदि अभी भी दान लेने की अभिलाखा है तो खालसा पंथ सजे के पश्चात गुरुसाहिब ने जो श्रीमुख से दान पूजा के निषध में फरमाया है सो सुनो —

इतिहासों में दशम गुरुवाक्य।

गुरुजी के पास जो बस्तु और नक़दी थी सब शत-

द्रुव में गिरादई ।

दासन सों इम हुकम बखाना ।
सकल निकालहु तोशेखाना ॥
सुन आज्ञा को करत निकासे ।
जरी वाफता मलमल खासे ॥
भार उठावत ले ले आवहिं ।
श्रीसतगुर के अग्र टिकावहिं ॥
जवहि वृंद को धरयो अगारी ।
दासन प्रति सतगुरू उचारी ॥
अतर फुलेलन थान भिगोवहु ।
तास बादला आदिक जो बहु ॥
वड़े वड़े पुरते वहु आये ।
कहकर अतर फेलेल भिगाये ॥
कहि सभहन को आग लगाई ।
जर बर भस्म भई सभ थाई ॥
तिहते निकस्यो रजत घनेरा ।
इकठो करबायो तिस बेरा ॥
शतद्रुव नदी किनारे गये ।
जल माहि एक गरत खन बये ॥
वहुर हुकम वहुतन को दीना ।
सिख़ दासन सों मान न कीना ॥

कंचन महा रजतपण जोऊ ।
कोश विखै तै आनहु सोऊ ॥
जो चहुदिश ते कह मंगवायो ।
अपरहु तोसो शकल अनायो ॥
तोरे आन रजत पण केरे ।
बहुत अशरफी ले ले गेरे ॥
रजत हेम को जितो खजाना ।
सिख हजारों सिर धर आना ॥
ल्यावन लागे मुक्ता हीरे ।
गेरे सरता जल महि तीरे ॥
कंचन चांदी के वहु बासन ।
हेम जरायू ल्याये सुदासन ॥
पुनह सिलहखाना मंगबाये ।
बहु मोलन के शस्त्र सुहाये ॥
कंचन मुकट जड़ाव जवाहर ।
खंडे खड़ग दुधारे जाहर ॥
तब इक सिख ने पनर उतारा ।
कट लपेट कर छापयो सारा ॥
अंतरजामी ने सो जाना ।
निकट सिखभा तबहु बखाना ॥
कट सो कहा लपेटन करयो ।

सुनत बाक को सो उर डरयो ॥
हाथ जोड़ कर कीनी विनती ।
सुनहु प्रभू मम ठानी गिनती ॥
मम कमान को पनच पुराना ।
शत्रुण संग लरहि जिस थाना ॥
इह जे टूट जाये इस वारी ।
तबहि चढावहुं इह गुण धारी ॥
रहित पंथ की नित्त लराई ।
चहु दिश विषै शत्रू समदाई ॥
बोले सोढी कुल अवतंस ।
यह पूजा की है सभ अंस ॥
विष समान सभ सिक्खन को है ।
हीन वीरता करती जो है ॥
दोनों लोकन करत विगार ।
लेन हारके पुन्न निबार ॥
जप तप ऐस्व लेत इम भाई ।
पोल तील ते जल जिम जाई ॥
इत्यादिक को करहि विवेक ।
औगन इस महि लखहु अनेक ॥
सुनत सिक्ख सो वर हर कांपा ।
चलन परयो वखशावन आपा ॥

सुन श्रीमुख ते हुकम वखाना।
त्यागहु पनच धरहु इस थाना ॥
जव सभ आय चुकयो असवाव।
सभ दिन धरते रहे शिताव ॥
सभ कौ श्रीमुख ते फरमायो।
अव तो सर्व पदार्थ आयो ॥
सव संगत अव डेरे चलो।
विसरामहु तन ते श्रम दलो ॥
सुंदर सजन विराजे आइ।
सभ सिख पहुचे निज निज थाइ ॥
॥ ४० ॥गु० प्र० सू० अध्याय ॥ २२ ॥ रुत ५

मित्रो इस ऊपर के लेख से मालूम होगया होगा कि पूजा के धन से गुरु महाराज अपने सिखों को कहांतक वचाते थे कि कमान के चिल्ले तक पूजा की अंस से सिख को वचाया और पूजा के धन को जहर की मानिंद लोक परलोक में नुकसान करने वाला बीरता को नाश करने वाला लेने वाले के पुन्न को लोप करने वाला जप तप को भंग करने वाला फरमाते हैं। करोड़ों रुपैये का खजाना वल्कि शस्त्रों को भी कि जिन की युद्ध के समय वड़ी जरूरत थी शतद्रुव में गिरादिया अगर दान के अधिकारी सिख होते तो फिर शतद्रुव में गिराने

की क्या जरूरत थी सिंहों को ही वरता देते।

जब गुरुजी ने मसंदों को हुकम किया कि पूजा लेने हरगिज न जाओ तो उन्होंने माताजी से कहा कि पूजा विना लंगर और खरच कैसे चलेगा इस पर माताजी ने गुरु के पास जाकर कहा। यथा—

किम निर्वाह विना धन आये।
सगरे वरज मसंद हटाये॥
पख की वात मात जब सुनी।
गुरु के हिदे भई रिश घनी॥
खश्री नथ्थड़ उजड़ धीये।
तृष्णा धरहि अधिक अधिकीये॥
पूर्व दोइ लाख जे दरवा।
धरयो छपाय खजानों सर्वा॥
नहि लंगर सिखन तिस माहीं।
भले संभार राखी अहि ताहीं॥
जो शत्रु हैं तुरक हमारे।
भाग तिन्हि को ताहि मझारे॥
सुन माता तू सन है रही।
भली करन मुहि होई वुरी॥
गु०प्र०सू०रुत ६ अ० ॥ १ ॥

माताजी से चुप होकर हट आये कि मैने उलटा

शाप ले लिया फिर समग्र बृतांत सिखों और मसंदों को सुनाकर एक और उनकी बाल्यावस्था का इतिहास सुनाया कि एक दफा छोटी अवस्था में शतद्रुव में स्नान कर रहे थे हाथ से जड़ाऊ कंकन जल में गिर पड़ा देखकर उठाया नहीं जब मैंने कोप होकर पूछा कि कंकन कहां है तो दूसरा कंकन भी उतार कर शतद्रुव की धार में जोर से फैंक कर कहा माताजी यहां गिरा था अलम् । सो हे सिखो कई हजार के कंकन शतद्रुव में गिरादिये यथा-

इक दिन जलक्रीड़ा बहु करैं ।
छीटन देत परसपर हिरैं ॥
जड़े जवाहर जाहर जोत ।
बहुमोले कंकन कर होत ॥
जल महि एक कटक गिरगयो ।
नहि निहार संभारन करयो ॥
शुषक वस्त्र पहिरे तब हेरयो ।
दासन कहयो कड़ा जल गेरयो ॥
मैं कर कोप कहयो ढिग तहां ।
क्यों न बतावत गेरयो कहां ॥
दूजो कंकन हाथ मझारा ।
सब के देखत तुरत उतारा ॥
कर बल बाहन दूर बगायो ।

शतद्रव के प्रवाह माहि पायो ॥ ४० ॥
गु० प्र० सू० अ० । १ ॥ रुत ॥ ६ ॥

प्यारे सिक्ख भाइयो गुरुसाहिव तो वाल्य अ॰वस्था से ही पूजा के धन को शतद्रुव में गिराते रहे हैं फिर अपने प्यारे सिंघों को अपने श्रीमुख से दान देना अच्छा क्यों कर कहसक्ते थे और वह दो लाख का खजाना क्यों लुटाया था। जिस की वावत शाप दिया था कि इस में हमारे शत्रुओं का भाग है और वह थोड़ेही दिनों पीछे शत्रुओं ने ही लूट लिया था जिसका हाल साखी २७ पूर्वार्द्ध में लिखा है—

इसी रीति सिख करते जंग।
होवन लगे दुखित क्षुध संग॥
खास खजाने दरव जितेक ।
पावहि शतद्रुव विषै तितेक॥ २२॥
पसमंबर आदिक सभ चीर ।
फुकवावै पावक प्रभु धीर ॥
इस विध सर्ब समाज निवेरैं ।
फूकै कै जल सरता गेरैं ॥
लोक पुकारन लागे पुरि मैं।
सह्यो न जाय क्षुधादुख उर मैं॥
प्रजा निकस कर गई बहिर को।

सुभट सिंह नहिं त्याग्यो गुरु को ॥
रहै क्षुधातुर तऊ लरत हैं ।
शस्त्रन मारत आप मरत हैं ॥
श्री गुजरी ढिग जाय बखानी ।
मात गुरुगत जाय न जानी ॥
अन्न विना सगरे मर जै हैं ।
पाओ पाओ कब कब इक पै हैं ॥
सुत की कृत सुन देख न सक्की ।
परम दुखी चित चिंता धरती ॥
कहि नहि सकै शाप ते डरै ।
रिसते कुछ मुख ते कहि परै ॥
इक दिन मन को दृढ़ कर आई ।
सभ विध कर दुख ते तपताई ॥
जग महि वर्णन गुरु कहाये ।
सिख मारन हित रचयो उपाये ॥
नित उठ सिंघ अग्र ह्वइ लरे ।
सिर पर वैरी कड़कत खरे ॥
सभ महि भूख वरत बहु रही ।
निस दिन भोजन प्रापत नही ॥
पूर्व दरब पाय दरीयाय ।
अब निकास सब देत रुढ़ाय ॥

को गुनाह सिक्खन अस करयो ।
जिसते इतो कष्ट तिन धरयो ॥
पाइया अन्न पाय हित खाने ।
किम लर सकहि सिंह वलह्वाने ॥
धीरज गयो छूट सब केरे ।
तुरक गिरीसन चहु दिस घेरे ॥
सभको अंत लख्यो अब आवै ।
हम समेत किम जीवन पावै ॥
अब भी वखशहु संगत तेरी ।
परखहु दुख भुख देह वडेरी ॥
सुन माता ते आप उचारा ।
हमको हुकम दीन करतारा ॥
तो यह पंथ सुधारन करयो ।
नाम इसनान आदि गुरु भरयो ॥
इसको हम विरधावन करैं ।
नहीं गालवे की इछ धरैं ॥
पूजा को लेकर जब खैहैं ।
तिस ते पंथ घाट बल व्है हैं ॥
सुनहु मात यह पूजा अंस ।
जहर अहै वल वुद्धि हि भ्रंस ॥
रण हित पंथ खरो मुहि कीन ।

क्षुधत नगन ही नीको चीन ॥
नरक विषै नहि इस को पावौं ।
बुरा न कर हऊ गुण सिखरावौं ॥
जिस बिध अहै पुत्र हम तेरे ।
विष नहि देह सकै किस बेरे ॥
तिम हम सिख पुत्रन किस भांती ।
विष पूजा ते कर है घाती ॥ ४० ॥

गु० प्र० सू० अ० ॥ २० ॥ रुत ॥ ६ ॥

अर्थात् सिंह भूखके कष्ट से व्याकुल होरहे थे और शत्रु सिरपर चढ रहे थे केवल कभी कभी पाओ पाओ भर अन्न खाने को मिलता था जान का धोखा हो रहाथा ऐसे समय में भी गुरजी ने सिंहों को पूजा का धन नहीं खाने दिया खासकर माता के कहने से भी आज्ञा न दी वल्कि पूजाके धन को जहर कहा जो खावेगा दग्ध होजावेगा जैसे माता आप अपने हाथ से हमको जहर नहीं देसक्तीं तैसे हम भी अपने सिखपुत्रों को जहर नहीं देसक्ते पूजा का धन खाने से इन में घाटा आजावेगा बुद्धिवल जाता रहेगा मुझको पंथ भूखा नंगा भला मालूम होता है परंतु पूजा खिलाकर नर्क में भेजना पसंद नहीं मित्रो सोचो एक जगे सिखों को दान

देनेके वास्ते फरमावें और वीसियों जगे उसको जहर कह कर उस से हटावें यह क्या बात है इसकारण उक्त सवैये (दान दिये०) सिखों पर कदापि नहीं घटसके ॥
(सिंहों दान निषेधी के श्रीमुख पातसाही १० जी के हुकम)

सिक्ख न पूजाखाय रंच निस्त कड़ाहा लेइ ।
गुरू भुगतही खाइये जो अरदासी देइ ॥

मुक्तनावां साखी ८ पूर्वार्द्ध

सिख पूजा कदापि न खावें केवल भोग का जरासा कड़ाहप्रसाद जिव्हा पर रखें अगर भुगतां खानी हों तो जितना प्रसाद बाटनेवाला देवे खालेवें परन्तु वह भुगत खोरा होगा अतएव रंचकमात्र ही श्रेष्ठ है ॥

धन पूजापर नहीं ललचाये ।
नित्त कड़ाह रंचक लगखाये ॥
सीत प्रसाद गुरुन को लेये ।
जो अरदासी वादत देये ॥

सूर्यप्रकाश अ० ५१ रु० ३

एकसमय सिखों ने गुरुजी से रहित पूछी सो रहित बतातेहुए कहते हैं ॥

देइ कुदान जु सिक्ख मम ग्राहक जावै नरक ।
अपनो भलो ताको बुरो ताहीते कर फरक ॥ ३६ ॥

जो सिख सिख को दान देवेगा लेनेवाला नर्क में प-

ड़ेगा इससे सिख को दान देने से फरक करो अर्थात् बचो ॥ गुरुजी ने अपने अनुभव से इस समय के प्रपंचियों का अभिप्राय ज्ञात करके हुकम भी देदिया था परन्तु फिर भी नहीं मानते ॥

कन्या धन जो ग्रहण धन देवपूज जो खाय ।
इहां तजैं तिह को सकल भली न गत सो पाय ॥

गुरुप्रतापसूर्य्य पं० ५०.५ से

जो मनुष्य पुत्रीधन और ग्रहणदान देवपूजा का धन खावैगा इस संसार में उसको सब त्याग देंगे और अंत में दुर्गति होगी, कन्याधन उसके विक्रय का धन अथवा विवाह पश्चात् उसके घर का द्रव्य ॥

मेरा सिक्ख ग्रन्थकी पूजा ले अरदास ।
ले खावै झूठा चुगल मेरा नहीं सो दास ॥ ४६ ॥

जो मेरा सिख ग्रन्थ साहिब की पूजा अरदास लेकर आप खावै अथवा औरों को खिलावै वह झूठा चुगल है मेरा दास (सिख) नहीं, जिन लोगोंका इसीपर गुजारा है उनका क्या हाल होगा ॥

खालसा सो जो लेइ न दान ॥ ४८ ॥

खालसा वह है जो दान न लेवै अर्थात् जो दान लेता है वह खालसा नहीं, मनमतियों को यदि खालसा बनना है तो (दान दियो इन्हीको०) इन सवैयों से सिखों

को झूठ मूठ दान लेना सिद्ध न करें नहीं तो "पाप बुरा पापीको प्यारा" गुरू वाक्य पापियों के लिये सत्य होता है और साखीमें गुरू साहिब फरमाते हैं ॥

मैं जो पंथ करा तिह कारन ।
नहि तो मेरो जन्म अकारन ॥
मेरा सिख न निवता मानै ।
मेरा सिख सुदान न दानै ॥
साखी ॥ १७ ॥ उत्तरार्द्ध ॥

मैंने पंथ इसकारण रचाहै कि मेरा सिख न्योता न मानै और दानपूजा न लेवे यदि मेरी यह आज्ञा न मानेंगे तो मेरा जन्म अकारण होगा सज्जन पुरुषो यदि अवभी न्यूता खाने और दान लेने से न हटोगे तो धन्य आप की सिखी जो गुरूआज्ञा भंग करते हो ॥

यथा—

पंथ रचयो मैं धर्म हित पूजा दान न खाय ।
लोभ बंध मानत नहीं सूकर जोनी पाय ॥ ८ ॥
गुरु प्रताप सूर्य कृत ॥ ५ ॥अंग० ॥ २४ ॥

मैंने धर्महेत पंथ रचा है न कि पूजा दान खानेके वास्ते परंतु लोभी पुरुष नहीं मानेंगे इस कारण वह सूकर का जन्म पावेंगे महात्मा पुरुषों अब तो पूजा दान लेनेवाले सिंह को ऐसा शाप भी होचुका अब तो बचो मान जाओ

नहीं फिर पश्चात्ताप से कुछ सिद्ध न होगा अवश्यमेव शूकर जन्म मिलेगा ॥ क्यों कि श्रीमुखवाक्य सत्य हैं

शस्त्र धार कर खाईये यह छत्रिण की रीत ॥
द्विज संतोषी दान भल खावे भजै सुमीत ॥ ४९ ॥
सू० रु ५ अ० ३७

शस्त्र धारकर अर्थात् जुद्धमयी नौकरी करके ॥ खाना तो छत्रियों की रीति है और ब्राह्मणोंको योग्य है कि संतोष से दान लेकर खावें और भजन करें अब बतायें दानका अधिकारी कौन है ॥

श्राद्ध कराई ब्याह धन मम सिख बिप्र जिखाहि ।
सो भेखी पापी अधिक अतिथ देइ जु नाहि ॥
॥ ४० ॥ सू० रु० ५ अ० ३७ ॥

जो बिप्र मेरा सिख होकर श्राद्ध विवाहदिक कराके द्रव्य लेकर खालेवे तो वह भी भेखी और पापी है जब ब्राह्मणं सिख के वास्ते यह आज्ञा है तो आज कलके लालची कुपात्र क्यों दानादिक लेते हैं ॥

बचन सुनया सभ संगती करी बेनती एह ।
जो द्विज हुय सिख पाहुली ताकी रहनी केह ॥
बाक भयो तब गुरू का आलमसिंह सपूत ।
छत्री धर्म सुपाय के द्विज ते भा पुरहूत ॥ ८ ॥
ताकी द्विजता छत्र की करै खड़ग की सेव ।

निवता करन न पूजाले जो दे ग्स दुख तेव ॥९॥
सू० रु० ५० अ० ३८

जब संगतों ने सिखों के वास्ते पूजा दान लेनेका निषेध सुना तो यह पूछा कि यदि ब्राह्मण सिख होजावे वह क्या करे इस पर आलिमसिंह को कहते हैं कि द्विज अमृत पीकर ब्राह्मण से इन्द्र बनगया उस का ब्रह्मत्व खत्री धर्म है खड़ग की सेवा करे न्यूता न माने दान न लेवे बल्कि जो देवेगा उस को दुख होगा अब सिंह दानपात्र कहाँ से बनगये ॥

दोहरा

बिप्र वर्ण उत्तम वड़ा, तीन देव को रूप।
पलटै मज़ब पीरन जजै सो पापी परै कूप ॥ ३२ ॥
सू० रु० ५ अ० ॥ ३७ ॥

ब्राह्मण वर्ण वड़ा उत्तम है और तीन देव अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश का रूप है जो ब्राह्मण अपने मत को छोडकर दूसरों का शिष्य बनता है या दूसरे पीरों को मानता है वह पापी है कूप में अर्थात् नर्क में पड़ेगा। किस शेखी पर तत्व खालसा ब्राह्मणों की निंदा करता है अपने गुरु वचन को देखें ॥

दोहरा ॥

है सकेश कै केश विन मेरा होय निसंग ॥

ब्राह्मण सोई व्याससम देवे दान उमंग ॥ ३० ॥

मू० रु० ५ अ० ३७

ब्राह्मण केशों वाला हो अथवा बिना केश वह निस्सदेह मेरा है ॥ सो व्यासजी की सदृश है । उसको उत्साह से दान देना योग्य है ॥

हम छत्री तुम सारसुतय्या ।
हम सुत तुमरे तुमहि जनय्या ॥

साखी १७ पूर्वार्द्ध ।

देखो यहां गुरु साहिव सारस्वत ब्राह्मणोंके अपने मुखसे पुत्र वने हैं । फिर तत्व खालसा किस मुंहसे ब्राह्मणों की अवज्ञा करते हैं । शोक शोक । अव बताओ दानपात्र कौन है ।

जियों मरजादा हिंदुओं गऊ मास अखाजु ॥
मुसलमानां सूअरहु सौगंद बिआजु ॥
सहुरा घर जाबाइए पाणी मदराजु ॥
सहा न खाई चूहड़ा माइआ मुहताजु ॥
जियों मिट्ठे मक्खी मरै तिस होइ अकाजु ॥
तियों धर्मसाल दी झाक है विहु खंडूपाजु ॥

वार भाई गुरुदास ३५ पौडी १२ ॥

जिस प्रकार हिंदुओं को गोमांस की आन है और मुसलमानो को शूकरमांस और व्याज निषिद्ध है और जामाता के स्वसुर की स्थिति बुरी है और

मदिरापान बुरा है और चूहड़े के साथ खाना मना है और मक्खी मीठे में अपने प्राण देती है इसी प्रकार धर्मसाल की झाक बुरी है अर्थात् धर्मसाला और डेरो आदि में पुजारी बनकर पूजा के धनकी आशपर बैठना। मित्रो यह पूजा बिख है परन्तु इस पर खंड का पाग (पाह) चढ़रहा है अर्थात तृष्णालु पुरुषों को मीठी लगती है परंतु वास्तव में गुरुहुकम अनुसार बिख है लालची लोग यह नहीं समझते वह केवल सांसारिक सुख और प्रतिष्ठा चाहते हैं जब पूजा दान को हिंदू मुसलमान वाली आन के तुल्य कहदिया तो फिर सिंह दान पूजा क्यों ग्रहण करते हैं बहुत से सिंह कहा करते हैं कि गुरु साहिब का निर्वाह पूजा से ही चलता था उनके पास और कोई आश्रय न था इसका उत्तर यह है कि यह उन की भूल है अनन्दपुर फीरोजपुर डरौली आदि में जागीरें बहुत थीं अबतक सोढियों के पास हैं ऐसे उनके पास भी बहुत थीं अब तत्व खालसा खुद ही तत्व निकाल कर देखलें ॥ मित्रो 'धीमिण से माता खाए, घरकी बला घरमें जाए' इस पंजाबी कहावत को सेखचिल्लियों की सदृश न पुरी कर रहे हो ॥

देखो एक गुरुमुखी विज्ञापन श्री भाई तारासिंह जी की ओरसे जो श्रीमान् श्री १०८ महाराजा नाभा नरेश के ज्ञानी भाईजी हैं और उनके साथ दरवार खालसा कालज अमृतसर में आए थे। उक्त भाईजी ने उक्त विज्ञापन वजीरहिंद प्रेस अमृतसर में छपवा कर बांटा। संवत् १९६१ वैसाखी के दिन जिसकी चौडाई १४ इंच और लंबाई १७ इंच की है जिसमें कुल अक्षर पंक्ती ४७ हैं॥ एक महात्माजी की ओर से दियेहुए पुरुष के फरजों का उपदेश॥ इस सुरखी के (हैडिंग) से लेख हैं उक्त विज्ञापन की पंक्ती १३ से १७ तक दो सवैये लिखे हैं यथा॥

(१) जुद्ध जिते इन्हीं के प्रसाद इत्यादि॥

(२) सेव करी इन्हीं की भावत इत्यादि॥

उक्त श्रीमुख वाक्य लिखकर भाईसाहिब उन सिंहों से जो उक्त सवैयों से ब्राह्मणों को दान देना नहीं मानते किंतु सिंहों को ही दान देना सिद्ध करते हैं उन से संशय रूपी प्रश्न कर झूठा करने के वास्ते चारदिन की मौहलत देकर निम्नलिखित संशय उक्त विज्ञापन की पंक्ती ४१ से ४७ तक करते हैं। कि यदि कोई भाईजी ज्ञानी सिंह इन उक्त सवैयों से सिंहों को दानदेना सिद्ध करसक्ता है तो हमारे पास आकर

शास्त्रार्थ करलें ॥ यथा--

॥ संशय ॥ गुरुसाहिब ने भिक्षा किससे ली और दान देना किस को लिखा ॥ यदि कहो कि सिंह को ही दान देना लिखा है तो बहुतसी जगा इसके निषेध के वाक्य भी हैं । जो सज्जन इस संशय का समाधान करना चाहें वह चार दिन के अन्दर वक्त मुकर्रर करके नीचे लिखे पतेपर तशरीफ लासकते हैं ॥ विज्ञापक सर्वत्र खालसाजी का सेवक ॥ भाई तारासिंह नाभा निवासी नाभा कैंप श्रीअमृतसर ॥

(नोट) मित्रों उक्त विज्ञापन उस जगह बांटागया है जिस जगह गुरूघर के सर्वत्र खालसा गुणी ज्ञानी विद्वान् और राजे महाराजे रईस सरदार जिमींदार आदिक देश देशांतर से सर्वत्र केइकत्र हुए थे खासकर पक्के तत्वखालसाजी उस जगह मौजूद थे यदि उनका लेख उक्त सवैयों के मिथ्या अर्थका पुस्तक गुरुमतसुधाकर में सत्य होता अर्थात् उक्त सवैयों के अर्थ खालसा को दान देनेके होते तो उक्त पुस्तक जरूर पेश करते । भाई तारासिंहजी ने पक्के तत्त्वखालसाजी के लेख को सर्वथा झूठ बनावटी समझकर सर्वत्र खालसा के समूह में उक्त विज्ञापन छपवाकर बांटा ॥ जो उक्त सवैयों के अर्थ से ब्राह्मणों को दान देने के विरुद्ध खालसा को दान

देना साबित करते हैं वह सिद्ध करके दिखलाते परन्तु कोई नहीं दिखलासका कैसे दिखलासकते थे?॥

कूड़ निखुटे नानका ओड़क सच्च रही ॥

और गुरूघर के अनेक विद्वान् उक्त सवैयों से ब्राह्मणों को दान देनेका हुकम फरमाते हैं गुरू साहिब का सिंहों को उक्त सवैयों से दान सिद्ध करनेवाले प्रथम अपने गुरू घरके भाइयों से फैसला करलें और यदि नवीन सिंह कहें कि सिंह गुरूसाहिब के साथी होकर युद्ध करतेरहे हैं इस वास्ते सिंहोंको ही दानका अधिकार उक्त सवैयों में कथन किया है ॥ मित्रों ब्राह्मणोंने भी गुरूजी के साथ जुद्ध में जुधकर फते (विजय) कराई है जो गुरूसाहिब दशम ग्रन्थ साहिब में वर्णन करतेहुए द्रोणाचार्य की पदवी देते हैं ॥

यथा—

कुपियो देवत्तेसं ॥ 'दयाराम' ॥ जुधं कीयो
द्रोण की ज्यों महां जुध सुधं ॥

बचित्र नाटिक गून्थ अध्याये ८कवता अंक ६
जुध भंगाणी ॥

(नोट) दानके झूठे लालची नवीन सिंहों को एक जुध का ही फखर था इसीकारण उक्त सवैये (दान दियो आदि) का अर्थ खिंचातार्णी कर अपने आप को

दान के अधिकारी बतलाते हैं॥ मित्रो उक्त दयारामजी को गुरमत इतिहासों में ब्राह्मण लिखा है जिसने भंगाणी में जुद्ध कर फते (विजय) कराई, जिसपर गुरु साहिब जी ने प्रसन्न होकर द्रोणाचार्य (गुरु) की पदवी दी इस कारण भी दानका अधिकार ब्राह्मणों कोही सिद्ध होता है।

दान के सवैयों में एक महात्मा जी की अनोखी राय

एक गुटका गुरुमत दिग्विजय गुरुमुखी अक्षरोंमें निर्मले साधु ईश्वरसिंह रचित आज हमारे दृष्टिगोचर हुआ उसमें महात्मा जी ने इन सवैयों के अपूर्व अर्थ बनाये हैं पाठकगणों के विचारार्थ समीक्षा सहित लिखते हैं उनके वचन के आदि में साधु, जवाब के आदि में उत्तर होगा प्रथम तो पुस्तक का नाम ही अयोग्य है क्योंकि उसमें गुरु साहिबान का दिग्विजय नहीं लिखा परंतु उसमें महात्मा ने स्वेच्छानुसार ३३ उपदेश लिखे हैं ॥साधु॥ दुर्गाआराधन के पश्चात् मैथिल ब्राह्मणको गुरुजी दक्षिणा देतेभये परंतु उसने क्रोध से नहीं लई ॥ उत्तर ॥ यह लेख अप्रामाणिक केवल कल्पित है क्योंकि सूर्य्य प्रकाश में सवालक्ष और साखी भाई गुरदास वार ११ की टीका में मनीसिंह जी साखी १३१ में एक लाख

रु० दक्षिणा देकर बड़ी प्रसन्नता से विदा करना लिखते हैं और वास्तव में पंडितजी ने प्रयोग दक्षिणा नियत करके कराया था फिर दक्षिणा का त्याग लिखना आपकी अनोखी राय नहीं तो क्या है ॥ साधु ॥ चउपटाय चित में जरओ त्रिण जिऊ कुञ्चित होइ । खोज रोज के हेत लग दिओ मिश्र जू रोइ ॥ मैथिल ब्राह्मण अपने दिनो के रोजगार को खोजकरके थोड़ा समझ कर क्रोध करता भया ॥ उत्तर ॥ यह दोहरा ग्रन्थ साहिब में तीनों सवयोंके अंतमें है महात्मा उससे विरुद्ध आदमें लिखते हैं शायद भाई मनीसिंह का हाल मालूम नहीं । और भी शब्दविरुद्ध किये हैं पंडित जी ने सवालक्ष रु० नियत करके प्रयोग कराया था फिर उसको थोड़ा कैसे कह सकते थे वास्तव में भी बहुत था और न किसी ग्रंथकार साखी और सूर्यप्रकाश आदि ने यह बात लिखी है ' यह सर्वथा महात्माजी की पंडिताई से असंभव है और सदैव के कारण मिश्रजी ने क्यों रोना था उनको केवल दुर्गा के प्रत्यक्ष के वास्ते बुलाया था सो कार्यसमाप्ति के पश्चात् सवा लक्ष देकर काशीपुरी पहुँचा दिये, उनका सदैव रांजी का कुछ सम्बन्ध न था ॥ साधु ॥ उस वक्त दयाराम गुरुघर का पुरोहित उनको समझाता है कि दक्षिणा से इनकार न करो

अवश्य लेलेवो अर्थात् दोनोंका सम्बाद होरहा है । ॥ उत्तर ॥ सूर्यप्रकाश उक्त साखी भाई मनीसिंह में तो लिखा है कि जब प्रथम भोजन न कराने के कारण सर्व ब्राह्मण क्रोध होगए तो उनको मनाने के वास्ते गुरु जी ने नन्दचंद दीवान वा भाई नंदलाल को भेजा महात्माजी झगड़ा मिटानेवाला दयाराम पुरोहित को ठहराते हैं हम नहीं कहते कौन सच्चा कौन झूँठा है महात्मा आपही कृपा करके समीक्षा करलें ॥ साधु ॥ यह दोनों ब्राह्मणों का परस्पर संवाद है सो पूर्व तप साधन समय ही भविष्यत् काल के होने विचार को अवलोकन करके निरूपण करदिया था ॥ उत्तर ॥ आप के कथनानुसार यह सर्व कथन दयारामजी का है मैथली मिश्र का कुछ उत्तर नहीं इसको परस्पर सम्वाद कहना अनुचित है और दसम ग्रंथजी में इस को श्रीमुख वाक्य लिखा है । और रिपोर्ट दसम ग्रंथ शोधित कमेटी अमृतसर सं० १९५४ में भी लिखा है कि ऐसे कवित्त गुरुजी ने हनुमान्नाटक की चालपर रचे हैं और अनेक ज्ञानी इसीप्रकार कहते हैं फिर आप सब से विरुद्ध चलते हैं ॥

(तपसाधन समयही भविष्यत् काल के होने विचार को अवलोकन करके निरूपण करदिया था) इसका

अभिप्राय समझ में नहीं आता क्या दयाराम ने तपसाधन समय कहदिया था अथवा गुरुसाहिब ने। यदि गुरुसाहिब ने कहा था तो दयाराम का कथन क्यों कहते हो और तपसाधन समय का क्या जिकर है गुरुसाहिब तो वर्त्तमानकाल में कहरहे हैं उसीवक्त मैथली मिश्र और दयारामजी मौजूद थे अर्थात् इस तुक में महात्माजी ने बड़ाभारी धोखा दिया और खुद खाया है॥ साधु॥ सो दसम गुरुजी के शब्द के अर्थ दयाराम मैथली मिश्र को कहता है॥ उत्तर॥ दसम गुरुजी का कौनसा शब्द है जिस के अर्थ दयाराम ने कहे हैं यदि कहो तपसाधन समय कहे थे तो दयाराम को किसप्रकार प्रतीत हुआ क्या दयाराम साथ था। और गुरुजी ने दयाराम को क्यों वकील बनाया। आप क्यों न कहा काशीजी से बुलाकर प्रयोग कराया उनकी आज्ञानुसार सब कृत्य किया उस समय आप क्यों न कहा यह सारी अपनी अनोखी राय देते हो जो वास्तव में सारी बनावट है॥

॥ साधु॥ दयाराम ने मैथली मिश्र को जुद्ध जिते इनही के प्रसाद॥ १॥ इनही के प्रसाद सुदान करैं॥ २॥ अघ औघटरे इनही के प्रसाद॥ ३॥ इनही की कृपा धनधाम भरे॥ ४॥ इनही के प्रसाद सुविद्या लई॥ ५॥ इनही

की कृपा सभ शत्रु मरे ॥ ६ ॥ इनही की कृपा ते सजे हम हैं ॥ ७ ॥ सेव करी इनही की सुहावत ॥ ८ ॥ दान दीयो इनही को भलो ॥ ९ ॥ आगै फलै इनही को दीओ ॥ १० ॥ इस प्रकार के वाक्यों से समझाया जब वह न समझे तब फिर कहा। मो गृह में तनते मनते सिरलौ धन है सभ इनही को ॥ उत्तर ॥ दसम ग्रन्थजी में ३ सवैये १ दोहरा श्रीमुखवाक्य लिखा है परन्तु इन्होंने तो प्रथम सवैया (जो कुछ लेख लिखयो विधना सोई पायत मिश्रजू शोक निवारो। मेरो कछु अपराध नहीं गयो याद ते भूल न कोप चितारो ॥ वागो निहाली पठै देहौं आज भले तुमको निहचै जीय धारो। छत्री सभै कृत विप्रण के इनहूं पै कटाक्ष कृपाके निहारो ॥) अन्त में लिखदिया क्योंकि इसके लिखने से मनमाने अर्थों की कलई खुलती थी इसकारण इसकी जगे अन्तका दोहरा लिख दिया और दोनों सवैयों में कुछ शब्द बदलदिये बल्कि एक दो तुकें निकाल भी दीं ॥

यथा—

१ इन्हीं की कृपा फुन धामभरे। फुन धाम की जगह धनधाम भरे लिखा है ॥

२ इनही की कृपा सभ शत्रु मरे । इसमें सभशत्रु की जगह हम शत्रु लिखदिया ॥

३ सेव करी इनहीकी भावत। भावतकी जमे सुहावत॥
४ अर आन को दान न लागत नीको।
यह समझ निकाल दई॥
५ जगमें जस और दियो सभही फीको।
यह भी समझ छोड़दी॥
६ नहीं मोसे गरीव करोर परे। इस दूसरे सवैये की तुक को तीसरे सवैये के पश्चात् और करोर परे की जगह करोड़ पड़ लिखा है॥

महात्माजी भाई मनीसिंहजी के बंद बंद जुदा इस कारण हुये थे कि उन्हों ने ग्रंथसाहिव का पाठ केवल आगे पीछे करदिया था। रामराय गुरयाई से खारिज किये गये थे कि उन्हों ने (मिट्टी मुसलमान की) जगे बादशाह के लिहाज से (मिट्टी बेईमान की) कहदई थी। आपने अपनी पुस्तक में दोनों कार्य किये हैं हम कुछ नहीं कहते गुरूमतावलंबी आप से समझेंगे और आप के कथनानुसार यदि यह दोनों सवैये दयाराम का वचन है और इनही का इशारा गुरूजी की ओर है तो बताओ दयाराम ने उनकी कृपा से किस प्रकार विद्या लई थी और कौनसा शास्त्र उन से पढ़ा था और यह प्रसंग कहां लिखा है और उनकी कृपा से दयाराम के कौन से शत्रु मरे थे और क्या दयाराम

आदि समग्र ब्राह्मण गुरूसाहिब से बने थे, पहिले न थे और क्या गुरूजी प्रोहित से ही सेवा कराते थे और गुरु साहिब क्या दान लेनेवाले थे प्रोहितों को दान देते होते हैं आप गुरुजी के श्रेष्ठ चेले निकले जो उनको दान लेने वाले कहते हो गुरुजी यह कहते हैं।

मेरा सिख न निवता मानै।
मेरा सिख सुदान म दानै॥

आप उनको ही दान लेनेवाले कहते हो धन्य हो। फिर आपने यह तुक (छत्री सभै कृत विप्रण के इनहू पै कटाक्ष कृपाके निहारो) क्यों उड़ादई जिससे आप की सारी कल्पना व्यर्थ होती थी॥ साधु॥ (नहीं मोसे गरीब करोर परे) अर्थात् फिर दयाराम मैथली मिश्र को कहता है कि हमारे तुम्हारे जैसे करोड़ों गुरुजी के पास हैं गुरुकी आज्ञा से हमने खातर कराने के वास्ते तुमको बुलाया था॥ उत्तर॥ सवैये की तुक में (नहीं मोसे) पाठ है उसका अर्थ (हमारे तुम्हारे जैसे) करते हैं निर्मले पंडित हैं जो चाहें सो कहें यह तुक दूसरे सवैये के अन्तकी है परन्तु यहां तीसरे के अन्तमें लिखी है यदि गुरुजी के पास मैथली मिश्र जैसे करोड़ों थे तो उनको काशीजीसे बुला कर सवालक्ष पूजाके क्यों दिये और यह बचन क्यों कहा (विप्र तुम्हारी करुणा पाई। कारज सिद्ध भये समुदाई)

मैथली पंडित जैसे करोड़ों में से महात्माजी दस बीसका नाम तो बतायें खालसा पंथ उससे एकसाल पीछे सजा है सहजधारीचरण पाहुलिये कुछ सिख थे फिर करोड़ों ब्राह्मण कहां थे खासकर मैथिली पंडित जैसे जो गुरु साहिब ने बड़ी तलाश से मँगाये थे ॥ संत होकर इतनी असत्य वार्ता कहनी योग्य नहीं ॥ साधु ॥ मेरो कछु अपराध नहीं इत्यादि ॥ छत्री सभै कृत विप्रण के इनहू पै कटाक्ष कृपाके निहारो ॥ उत्तर ॥ यह सवैया आद में था महात्मा ने अन्त में लिखा है इसकी भी पहिली तुक (जो कुछ लेख लिखयो विधना सोई पायत मिश्र जू शोक निवारो) समग्र दूसरी अर्द्ध तीसरी सारी छोड़दई है अर्थात् चार तुकों में से केवल डेढ़ तुक लिखी, ढाई हजम होगई ॥ साधु ॥ उक्त सवैये के अर्थ यह हैं कि छत्री शस्त्रविद्यासे सिद्ध कियेहुए कारज हैं सो ब्राह्मणों के धर्म की रक्षा वास्ते हैं॥ तिलक जंञु राखा प्रभु ताका। इस कथन से यही अर्थ यथार्थ है ॥ उत्तर ॥ क्या अनोखे अर्थ किये हैं (कृत) का अर्थ सिद्ध कियेहुए कारज हैं (विप्रण के) का अर्थ ब्राह्मणों की रक्षा के वास्ते हैं सीधे अर्थ (सब क्षत्री ब्राह्मणोंके कियेहुए हैं) इस से विरुद्ध कैसा अनर्थ किया है ॥ दृष्टांत में (तिलक जंञु राखा प्रभु ताका) लिखा जिसका भाव यह समझे हैं कि गुरु

तेगबहादर ने ब्राह्मणों का तिलक जनेऊ रखा है यह केवल भूल है शुद्ध अर्थ यह हैं (प्रभु) ईश्वर ने गुरु तेग बहादर के तिलक यज्ञोपवीत की रक्षा की है ॥

पहिले सवैये की दूसरी आधी तुक (मेरो कछू अपराध नहीं) लिखकर भी अर्थ करने में छोड़ गये क्योंकि स्वेच्छा अर्थों में हानिकारक थे ॥ साधु ॥ भूल न कोप चितारो । अर्थात् भूल के भी क्रोध न करो ॥ उत्तर॥ यह पहिले सवैये की दूसरी तुक का अर्द्धभाग पहले लिखचुके उसके पीछे तीसरी चौथी तुक लिखकर यहाँ फिर अर्द्धभाग दूसरी तुकका लिख दिया गयो याद ते अक्षर छोड़ दिये यह अक्षरों का उलट फेर किया है अब अर्थों की निर्मलता सुनों सारीतुक यह है । (मेरो कछू अपराध नहीं गयो याद ते भूल न कोप चितारो) अर्थात् मेरा कुछ अपराध नहीं आप मेरे याद स भूल गये कोप न करिये । संतजी ने (भूल न कोप चितारो) इतने टुकड़े को जुदा करके ॥ (भूलके भी क्रोध न करो) अर्थ किये हैं अब पाठकगण इस फरेब को देखें ॥ साधु ॥ कोचित् मूर्ख सिख ब्राह्मणों का कथन है कि दसमें गुरुजी कहतेहैं मेरा तन मन धन सिर सब कुछ ब्राह्मणोंका है सो इस से तो दसमें पादशाह के ब्राह्मण ही गुरु ठहरे जब इस उलटे अर्थ का कारण उन से पूछा जाता है तब उन बेवकूफों को कोई उत्तर

नहीं आता ॥ उत्तर ॥ महात्माजी सिख और ब्राह्मण तो मूर्ख बेवकूफ हुए, क्या बुद्धिका ठेका आपने ही लिया हुआ है धन्य अहङ्कार—

"बड़े बड़े हंकारिया नानक गर्ब गले"

क्यों महात्माजी इसी पंडिताई पर सीधे अर्थ करते हुओं ने गुरू महाराज की वाणीको भी तोड़ फोड़कर सीधी करदिया, आपने तो गुरू दसमजी को भी सिख और ब्राह्मणों की पदवी देदी जिसको हम उक्त लिखकर चुके हैं रहा आपका विचार अक्षरार्थ और सीधे अर्थों को छोड़कर कि ब्राह्मण गुरू साहिब के गुरू ठहरते हैं ॥ इसके बचाव के लिये सो अपने लेख में खुद सिख और ब्राह्मणों के अर्थों को माना है ॥ यथा ॥ दसम श्रीगुरूजी का पुरोहित दयाराम नामक घर का ब्राह्मण समझाता है महात्माजी गुरू साहिब ने मैथिली ब्राह्मण की विनती खुद की अथवा घरके ब्राह्मण से करवाई वह एक ही ब-राबर है क्योंकि वकील मुद्दई मुद्दाले का रूपही होता है ब्राह्मण के गुरू ठहरनेका कोई जिकर नहीं दक्षिणा (दान) का ब्राह्मण को हुकम है सो दयाराम की मारफत खुद मानचुके हो ॥ बाकी रहा गुरू की बाबत सो महात्माजी गुरु साहिब ब्राह्मणों को गुरू मानते हैं ॥ यथा—

(१.) ब्राह्मण गुरू है जगत् का ॥ आद ग्रन्थसाहिब ॥

(२) दयाराम जुधं कियो द्रोण की ज्यों ॥
दसम ग्रन्थसाहिब ॥

(नोट) गुरू दसमजी ने द्रोण (द्रोणाचार्य्य) अर्थात् (गुरू) की पदवी दी है ॥

(३) चहुवर्ण को दे उपदेश । नानक उस पंडित को सदा अदेस ॥ आद ग्रन्थसाहिब ॥

(४) महात्माजी गुरू दसम अहंकारी नहीं थे ॥ यथा— 'अस गोविंददास तुहार' दसम ग्रन्थसाहिब ॥

(नोट) ब्राह्मण गुरू जरूर हैं क्योंकि गुरू साहिबों के यज्ञोपवीत संस्कार करवाये हैं ॥

(प्रार्थना)

मित्रो महात्माजी ने गुरू महाराज के श्रीमुख शब्दों की अदलाबदली की है अर्थों की करें सो थोड़ी है इसी प्रकार इनके बाकी ३२ उपदेश और सारी पुस्तक को समझो ॥ अलम् ॥

अब मैं इस स्थान में गुरु साहिबों और उन के मुख्य गुरुद्वारों और मुखो २ पुरुषों (महंतों आदिकों) के तीर्थ प्रोहितों को जो दान के हुकमनामे दिये हुये हैं दिख-लाता हूँ असल इबारत गुरमुखी अक्षरों में पुरानी बाहियों में मौजूद है उन की नकल शास्त्री अक्षरों में की जाती है जिस से दानपात्र ब्राह्मण ही सिद्ध

होंगे और उक्त सवैयों के उलटे अर्थ करने वालों के छक्के छूट जायेंगे।

(नम्बर १)

हुकमनामा गुरु गोविंदसिंहजी का मनीराम प्रोहित कुरुक्षेत्री को दिया जो उनके पास है ॥
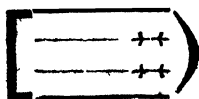
श्रीवाहगुरुजी की आज्ञा है सर्बत संगत को मेरा हुकम है जो सिख वाहगुरूजी का होवै सो मनीराम प्रोहित कुलखेत्र का इसनो मंनणा मेरी खुशी है॥ इहु गुरूजी का प्रोहत है सो सर्बत संगत का प्रोहत है॥ जो सिख मनैगा सो निहाल होवैगा जी संमत॥ १७६१ ॥ मिती फागसुदी॥ २॥ सतरा छाह॥ ६॥

(नोट)

श्रीगुरुगोविंदसिंहजी के दसखत अंकावली नागफणी में हैं॥

इस उक्त हुकम नामे की पुष्टी के लिये हम और लेख दिखलाते हैं अर्थात् खालसा धर्म के विद्वान् आद ग्रन्थ साहिब के कोश रचता तारासिंहजी गुरुतीर्थसंग्रह गुर मुखी पुस्तक जो संमत १९४१ कंप अम्बाला हैपल प्रेस में छपी है उसके पृष्ठ १३३॥ पंक्ति १८॥ १९॥ में यह

लिखते हैं कि सम्बत ॥ १७६१ ॥ में जो गुरुजी के मनी-राम प्रोहित को हुकमनामा दिया था सो उनके पास है इस कारण उक्त हुकमनामा बहुत सच्चा है और उसी पुस्तक के पृष्ठ २३७ पर पंक्ति ६ से १० तक यह लिखा है कि देवी सिद्ध करानेवाले ब्राह्मण को सवालक्ष रुपया श्रीगुरुगोविंदसिंहजी ने देकर बिदा किया था ॥ मित्रो इत्यादि लेख से उक्त गुरुसाहिब का ब्राह्मणों को दान का हुकम देना स्पष्ट सिद्ध होता है ॥

(नम्बर २)

भिछाराम प्रोहित कुलछेत्र के पास हुकमनामा-डेरे गुरु नानकजी के कुल्ल वेदी साहिबजादयों का नकल मोहर समेत

अंवरभरा अंवरापद
पाइआ गुरुनानक
नामजप
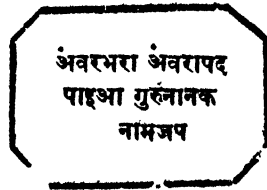
लिखतम सर्वत साहिबजादे वेदी वंस बावे माणकचंद के बावे मेहरचन्द के ॥ जो कोई कुरुक्षेत्र में जावे सो दोनों प्रोहितों को मंने ॥ अधका प्रोहित सदासुख ॥ ते अधका प्रोहित रामलाल ते गुरसहाय ॥ उपरले दसखंत

देखके लिखदित्ता ते मोहर करदित्ति ॥ संवत ॥ १८७४ ॥ माघ महीने ॥

(नम्बर ३)

हुकमनामा गुरद्वारा खंडूर साहिब (गुरु अंगदजी का)
जो कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रोहित गंगाराम के पुत्र
मंगलरामजी की बही से नकल किया

॥ नकल असल ॥

श्री गुरु अगद साहाइ
देहुराजी ॥ १८८२ ॥

१ ओं सतिगर प्रसादि। लिखतम सर्व साहिबजादे श्रीगुरु अंगदजी दी अंश तिहुण देहरे जी ओ लिख दित्ता मिश्र नानू प्रोहित कुलक्षेत्र का ॥ ॥ जो गुरु अंश होवे सो पूजा इनकी करे । पुत्र भवानी सहाय का पोत्ता हरलाल का प्रोहित कुलक्षेत्र दा जात जौहरी सम्बत ॥ १८९८ ॥ मिती माघ २२

(नम्बर ४)

हुकमनामा गुरद्वारा बावली साहिब जी गोयंदवाल ॥
मंगलरामजी प्रोहित कुरुक्षेत्र के पास

श्रीगुरु अमरदास जी
सहाइ श्रीवावलजी

१ ओं सति गुरुप्रसादि

लिखतुम श्री गोंदवाल ,वावली साहिव श्री चौवारा साहिवजी सर्वत श्रीगुरु अमरदास जी का अंश लिख दित्ता ॥ कुलक्षेत्र दा परोहत नानुराम पुत्र भवानी।साह दा पौत्रा हरलाल दा नानूराम दा भतीत्ता गोपालजी ॥ सर्वत दा प्रोहित कुलक्षेत्र दा जात जौहरी संवत १८९८ माघ दिन ॥ २८ ॥ उप्रलीआं मौहरां दो और हैं इस इस स्थान ॥

(नोट) गुरु अमरदासजी ब्राह्मणों के मानने के लिये आदग्रंथ साहिव में हुकम देते हैं यथा ॥

केशोगोपाल पंडित सदिअहु हरिहर कथा पड़ह पुराण जीउ ॥ आदग्रंथ साहिव राग रामकली सद पौड़ी ॥ ५ ॥

सूर्यप्रकाश में वावली साहिब के प्रसंग में पंडित केशोगोपाल की कथा का प्रसंग साफ लिखा है और वैसे ही पंथ प्रकाश जो सम्वत १९४६ वि० मतबे आफ-ताव पंजाव लाहौर में छपे के पूर्वार्ध पृष्ठ १८३ पंक्ति १ से ७ कथा गुरु ३ विश्राम १५० अंक ९ में लिखा है ॥ यथा ॥

सुनै कथा दिन हरे विशाल ।

पंडित इक केशोगोपालू ॥
निगमागम पौरानन केरी ।
कथा सुनावै नितप्रति टेरी ॥

मित्रों जो लोग केशोगोपाल का अर्थ इस जगे (वाहिगुरु अकाल पुरुष) करते हैं वह धोखा देते हैं क्योंकि श्रीरामचंद्रजी महाराज ईश्वरअवतार हैं और अनेक पुरुषों का नाम भी रामचंद्र है और गुरु नानक गुरुसाहिव हुये हैं और अनेक पुरुषों का नाम भी नानक है फेर प्रसंग से विरुद्ध केशोगोपाल का अर्थ परमात्मा क्यूं लेते हैं और इसके आगे जो ग्रंथसाहिब में (सदिअहु) शब्द है इसका अर्थ पंजावी बोली में वुलाना है. तत्व खालसावाले इसका अर्थ शीघ्र जलदी लेते हैं अगर यह सचभी माना जावे तो अर्ध तुक का अर्थ यह होता है 'वाहिगुरु जलदी' अव पाठक गण सोचलें क्या अर्थ हुआ उसके आगे "हरिहर

सटीपणी (फुट नोट)

(१) देखो कोस श्रीगुरू आद ग्रन्थसाहिव भाग १ जो गुरू मत के विद्वान् पंडित तारासिंहजी कृत जिसको श्रीमहाराजा पटियाला ने सं० १९५२ वि० गुरुमुखी अक्षरों में छपवाकर धर्मार्थ बांटे के सफे १९५ कालम २ सतर १९ सदिअहु को पंजावी बोली और अर्थ बुलाना किया है ॥

कथा पड़ेहु पुराणजीउ " इसका क्या सम्बन्ध होगा और तो कुछ नहीं समग्र तुक के यह अर्थ होसक्ते हैं 'वाहिगुरु जलदी हरिहर कथाका पुराण पढे' वाह वाह कैसे तीक्ष्ण बुद्धिवाले उत्पन्नहुए हैं ॥ जिससे पुराण पढनेवाले ब्राह्मण ही ईश्वर सिद्ध होते हैं सो ऐसी मती नवीन सिंहों की नहीं ॥ अब हम केशोगोपाल पंडित का नाम सिद्ध करने के वास्ते और लेख लिखते हैं गुरुमत के इतिहास ग्रन्थों में पंडित केशोगोपाल कथा करनेवाले लिखे हैं, और केशोगोपालजी की सन्तान में से आजतक ब्राह्मण गोयंदवाल में मौजूद हैं वह हरसाल श्राद्धों के दिनों में उनके नाम से पार्वण श्राद्ध कराते हैं जिसकी दक्षिणा (दान) एक रुपया छै ब्राह्मणों का भोजन (परोसे) लेते हैं ॥ गुरु अमरदास जी के उपाध्याय श्रीकेशोगोपालजी की वंशावली यह है जो अठवंस पाठक सारस्वत ब्राह्मणों में से हैं ॥

४ [तख्तराम]

५ [नारा] [चंद] - [नरोत्तम] - [लछमन]

६ [जेठ]

७ [दुर्गादत्त]

८ [सैजू]

९ [चंदराम]

१० [ठाकुरदास] — [जोध]

११ [देवदत्त] — [गोविंद] — [दूलोराय]

१२ [छजूराम] [माधोराम] [श्रीकृष्ण] [नथूराम]

१३ [सोमा] [सालग्राम] [ब्राह्मानंद]

(नोट) और केशोगोपाल की सन्तान जो गोयंदवाल से बाहर रहते हैं वह नहीं लिखे लेखवृद्धि के भय से ॥ मित्रो सारस्वत पाठक ब्राह्मण भलों के प्रोहित हैं हम भी सारस्वत पाठक ब्राह्मण सरसेराणियां से रोपड़ में आएहुए असली भलों के प्रोहित हैं ॥

मित्रो यह सं० १८६१ वि० से तेरवी १३ पुश्तमें पंडित सालग्राम और ब्रह्मानन्दजी गोयंदवाल में श्राद्धोंके दिनों में सदैव गुरुसाहिब के निमित्त पिंडदान कराके उक्त दक्षिणा लेते हैं ॥ इसवास्ते उक्त हुकमनामा कुरुछेत्र का बहुत सच्चा है जिसको सत्य प्रतीत नहीं हो वह जाकर देखलें गोयंदवाल में ॥

(नम्बर ५)

दत्तीराम के पुत्र चन्दुरामजी प्रोहित कुरुक्षेत्र में हैं। नकल हुकमनामे बावे वन्दे के पड़पोत्रे की जो उनके पासहै॥

॥ ॐ सतिगुरु प्रसादि ॥

लिखतु फतेसिंह बाबासाहिब जुझारसिंहजी के पुत्र श्रीबाबा रणजीतसिंह के पोत्रे श्रीबन्दे साहिबजी दे पड़ोत्रे श्रीकुलखेत्र आए कुटम्ब सहित ॥ प्रोहित कीते वीरभान रतनचन्द नू मंनना जो कोई हमारा कुल सिखसेवक होवे सो एहना नूं मंनना ॥ अगे भी लिखदित्ता है ॥ मैं भी फतेसिंह ओहना लिखे लिखदित्ते सं० १८८२ चेत्र=प्र० ४ ॥

दसखत अरजनसिंह मुसाहिब

—०—

(नम्बर ६)

हुकमनामा गुरद्वारे हजूर अवचलानगर साहिब का जो श्रीमान् पंडित जगन्नाथ जोतिषी तथा पंडित ल्यामीकीतजी प्रोहित कुरुक्षेत्र को मिला

टिप्पणी (१) देखो

ओं वाहगुरुजी की फते है ॥

सत्ति श्रीहजूर महाराज गुरू नानक गुरू गोविंदसिंह जी ॥ सच्चा तेरा दरबारा ॥ महिमा गुर की अपर अपार ॥ दरवारन में तेरो दरबारा ॥ सच्चिखण्ड बसै निरंकारा ॥ लछमी तुमरे खड़ी दुआरा ॥ बारबार गुर को नमस्कारा ॥

सटीपणी (फुट नोट)

(१) देखो ग्रन्थ श्रीगुरूमतनिर्णयसागर गुरूग्रन्थ साहिब के कोश रचता पंडित तारासिंहजी कृत जो सरदार बूटासिंह राय बहादर रावलपिंडी निवासीजी ने ऐंगलो संस्कृत प्रेस लाहौर सं० १९५५ वि० में गुरमुखी छपवाकर धर्मार्थ बांटे के सुफे ६१३ सतर १९ उक्त मोहर के लेख को बहुत सही माना है ॥ यथा ॥ बहुत से जिनमें ॥ देग तेग फतह नुसरत वेद रंग ॥ या फतह नानक गुरु गोविंदसिंह यह मोहर में लिखा है ॥ वह अवचल नगर साहिब में अब लिखदेते हैं ॥ बहुत से केसगढ़ अर पटने जी से लिखदेते हैं ॥ यह सभ सही हैं ॥

(नोट) उक्त ग्रन्थ सच्ची झूठी वाणी की परीक्षा प्रकर्ण में लेख है उक्त मोहर को बहुत सही (बहुत सच्ची) गुरुमत के सिद्धान्त मानते हैं ऐसे ही और मोहरों को समझो ॥

॥ दोहरा ॥

नानक गुरू गोविंदसिंहजी पूरन गुरू औतारा ॥
जगमग जोत विराजरही अवचल नगर अपारा ॥

॥ सवैया ॥

दीनदयाल गरीवनिवाज महाराज गोविंदसिंहजी राजनराजा । मुकट विराजत है सिर ऊपर सिर छत्र झुलै कलगी छवि छाजै ॥ सुन्दर धाम वनियो वङ्गला तिह वीच गोविन्दसिंहजी आप विराजा । चारोहि द्वार महाछवि पावत अमरापति देख महामन लाजा ॥

लिखतम पुजारी हजूर के ॥ भाई रामसिंहजी भाई गाहूसिंहजी ॥ भाई रतनसिंहजी धूपिआ ॥ भाई देसा सिंह सुखई ॥ भाई वूटासिंहजी ग्रन्थी ॥ भाई नथासिंह भाई सूरासिंह वुंगई ॥ होर समूह खालसाजी जो गुरु साहिव के प्रोहित हैं मिश्र मिम्मा सोई साडा प्रोहित हुआ ॥ जो गुरुसाहिव का सिख सेवक होवेगा सोई इननो मंनैगा इह गुरूजी के प्रोहुतु हैं जो इननो मंनैगा सो निहाल होवैगा ॥ संमत ॥ १८६६ ॥ मिती कातकशुदी दशमी १० शुक्रवार शुभमस्तु ॥

—०—

(नम्बर ७)

श्रीमान् पंडित विष्णलाल शिवराम दोहतरे भवानी

दासजी के ॥ प्रोहित सोढवंश श्रीगङ्गाजी के जुआलापुर निवासी॥ हुकमनामा श्रीअमृतसरजी के सर्वत्र गुरद्वारों का ॥

१

अकाल सहाइ
श्रीगुरु तेग बहादर
जी संवत १८६६

२

अकाल सहाइ
खालसाजी

३

अकाल सहाइ देहरा वाले
अटलराय जी दा
संवत १८४०

४

अकाल सहाइ
नंदपुरजी

५

श्री केसगढ़
सहाइ खालसाजी

६

ओं अकालसहाय
श्रीअमृतसर झंडा
गुरु रामदाससाहिबजी
दा संमत १८७१

७

१ ओं श्रीअकालसहाय
तखत अकाल बुंगाजी
संमत १८६४

८

श्री अकालसहाय शहीद
बुंगाजी समत १८६४

९

अकालसहाय श्रीगुरु
तेगबहादरजी
संमत १८६६

ओं श्रीवाहिगुरूजी की फते है ॥ सत्ति श्रीअकाल पुरुषजी का खालसा सन्लम की रछिया करै दुरजन दल दालसा ॥ प्रीति गुरुचरणकमल संगि सबदि रंग लालसा ॥ लिखतं श्रीसर्वउपमा जोग श्रीदरबारसाहिब जी श्रीसर्वउपमा जोग श्रीतखत अकालबुंगासाहिबजी ॥ स्यामसिंह ग्रन्थी=गुरुमखसिंह ॥ भागासिंह ॥ सर्वत मुसद्दी अरदासिये धूपिये झंडा बुंगाजी शहीद बुंगाजी होर सर्वत खालसाजी ॥ सर्वत पंथ जोग लिखिआ है जो श्रीगंगाजी का पुरोहित गुरु का ॥ उत्तमचंद का बेटा

वंश का ॥ इसरदास का बेटा भवानीदास इनको गुरु का तीर्थ प्रोहित जानकर सर्वत ने मंनणा ॥ ते इक ब्राह्मण इछाराम मयाणा छल करके हुकमनामा प्रोहिताई का अवचला नगरजी से लिखवायकर लैआया ते सर्वत गुरु द्वारियां कीआं मोहरा छल करके लवाइ लैगिया सो भी पत्रा उसपासों गुआच गया है ॥ उसनों प्रोहित करके नहीं मंनना ॥ जिसतरां होर हुकम नाविरा हैन ॥ तिस तरां हुकम नावीआ है ॥ प्रोहिताई इसरदास भवानी दास कीआं दी पक्की ॥ इच्छाराम मयाणा प्रोहिताई दा झगड़ा इनानाल करे नाही जे झगड़ा करे तां झूठा सर्वत विच होवैगा ॥ दसखत गंडासिंह ग्रन्थी लोहगढ़ साहिवजी दे ॥ संमत १८७६ ॥ माघो दिन ॥ ९ ॥ सतरा ॥ १५ ॥

पुरानी वहीमें और लेख ॥

—०—

१ ओं श्रीवाहगुरुजी की फते है ॥
श्रीकेशगढजी तखत साहिव ते हुकमनामा सर्वत

सटीपणी (फुट नोट)

(१) इच्छाराम मयाणा भी इसरदास जैसा ही तीर्थ प्रोहित है इनका वजुर्ग एक है ॥ छल नहीं किया अपनी वंड में समझकर हुकमनामा लिखाकर लेगिया होगा ॥

पंथका जी खालसेजी का प्रोहित खालसेजी ने मनना जी जे कोई इसनाल झगड़ा करै सर्वतका देनदार होवै। जन्मस्थान खालसे वासी ॥ सतिगुरु कहियो प्रभु सुख वासी ॥ देगतेग सतिगुर भगवाना ॥ श्रीमुख ते इम वचन बखाना ॥ गंग प्रोहित=इशरदास ॥ तिसका बेटा भवानीदास ॥ प्रोहित ताको कीयो प्रमाण ॥ जो औ मंनै सो होइ निहाल ॥

(नम्बर ८)

नानकराम वंसीराम पुरोहित श्रीगङ्गाजी के हुकम नामा हजूर अवचला नगरजी का नकल मोहरों की

१

श्रीअकालपुरख सहाइ
खालसाजी

२

गुरू अमरदासजी
सहाय

३

नानकसरण
तिलोकसिंह

४

श्रीगुरु
अमरसहाय
देहराजी

५

अकालसहाय
बावेदी देरजी
१८६०

६

अकालसहाइ
श्रीसुकततरजी

७

अकालसहाय
अनंदपुर जी
सहाय

८

अकालसहाय देहरावाले
अटल रायबा१८६०

९

अकालसहाय
खालसाजी

१०
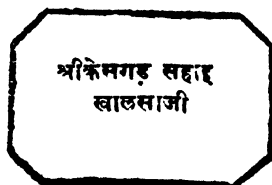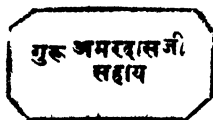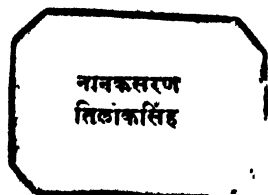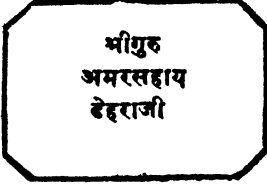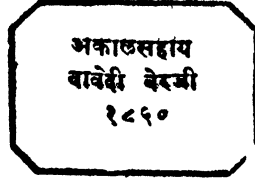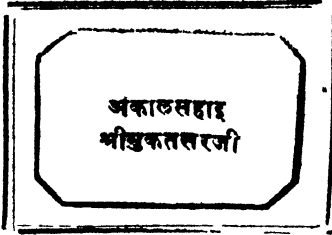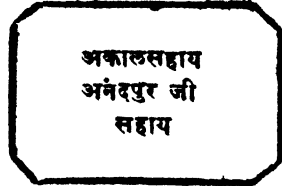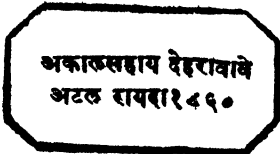
अमर भरा
अमग पदपाया
गुरु नानक कल
नाम जपाया

११

१ ॐ सति गुरप्रसादि
श्री तरन तारन जी सहाइ
सर्वत खालसाजी १८६६

१२

श्रीअकालसहाय
शहीद बुंगाजी

१३

१ ओं अकालसाहिइ
श्रीअमृतसर झंडा गुरु
रामदास साहिवजीदा
संमत १८७१

१४

१ ओं श्रीअकाल
सहाइ तखत अका
ल बुंगाजी सम्वत
१८६४

१५

१ ओं सतिगुरप्रसादि ॥
देग तेग फते ॥ नुसरत वेद
रंगयाफते या फते नानक श्रीगुरु
गोविंद सिहंजी ॥ श्रीअकाल
पुरुसजी सहायजी

१६

नकल असल हुकमनामे की
श्रीगुरूनानक निरंकारीजी सहाइ ॥
१ ओं श्रीवाहगुरुजी की फते है ॥

सस्ति श्रीमहाराजे गुरुनानक गुरु गोविंदसिंहजी च-तुरभुजे विष्ण अवतार ॥ महिमा गुरकी अपर अपार ॥ दरवारन में तेरो दरबारा ॥ सच्चखण्ड बसै निरं-कारा । लछमी तुमरे खड़ी दुआरा ॥ सर्ब देव तुमै करत नमस्कारा ॥

॥ दोहरा ॥

नानक गुरू गोविंदसिंह जी पूरन गुरु पूरन अवतारा ।
जगमग जोत विराज रही अचचल नगर अपारा ॥

॥ सवैया ॥

[illegible] गरीब निवाज महाराज गोविंदसिंह जी,

राजन राजा मुकट विराजत है सिर ऊपर सिर छतर झुलै कलगी छवछाजा ॥ सुंदूर धाम बनियो वंगला तिह वीच गोविंद सिंह जी आप विराजा ॥ ४ ॥ चारही द्वार महा छवि पावत अमरापत देख महामन लाजा ॥ शुभ जन्म धंन धंनै ॥ पर उपकारी सनमुख दरवारी उजले मस्तक परम सुजान सर्वउपमा जोग सर्वत संवुह खा- लसाजी वाह गुरुजी फते बुलावनी ॥ हजूरका वचन हैजी । इच्छाराम ब्राह्मण कणखलपुरी श्रीहरद्वार गं- गाजी का वासी है । प्रोहित हजूर का है इसको मंनना टैहल सेवा करनी ॥ श्रीगुरु जी निहाल करेगा । सर्वत गुरु का सिख सेवक इस ब्राह्मण प्रोहत को जो मन्नैगा सो हमको मंन्नैगा ॥ इसका दीया सफल होवेगा ॥

दोहा

प्रोहत हमरो जानकै जो मानै सुखपाइ ।
लोक सुखी परलोक सुख साति गुरु सदा सहाइ॥

संमत १८६६ ॥ भाद्र शुदी २ ॥ रविवार ॥

—o—

(नम्बर ९)

हुकम नामा गुरद्वारा डेहरा बावा नानक प्रोहित हरद्वार पंडित बद्रीदयाल जी के पास कनखल ज्वा- लापुर निवासी

तो (सूर्यप्रकाशादि) ग्रन्थोंपर भी हाथ साफ करदिया है और मालूम नहीं क्या क्या जौहर दिखलावेंगे ॥ विदित हो कि खालसा मत में पहिले से चार तख्त अर्थात् (अमृतसरजी ॥ अनन्दपुर साहिब ॥ पटना साहिब ॥ श्री अबचलानगर साहिब ॥) मुख्य गुरुसाहिबों की जगे मानेहुए हैं जो हुकम उनसे जारी होता है सर्वत्र खालसा सिरपर धरते हैं जिस पुस्तक और व्यवहार को वह विरुद्ध कहदें उसको तमाम खालसा विरुद्ध मानते हैं यह चारों गुरुमत प्रभाकर और गुरुमत सुधाकर आदि नये २ गुटकों को सर्वथा गुरुमत से विरुद्ध फरमाते हैं और नवीन सिंह सभाओं के मिम्बरों को झूठ पर झूठ बतलाते हैं यथा—हम एक पुराणे गुरमुखी अखबार से उक्त सब तख्त साहिबों की राय भाषा में अक्षर अक्षर नकल करके शिक्षार्थ पेश करते हैं ॥ अखबार खालसा नौ जुवान बहादुर अमृत्सर की जिल्द १ नम्बर५ फरवरी ५ सन् १९०० ई० में जो मतबै चश्मैनूर प्रेस अमृत्सर में भाई सुंदरसिंह एडीटर की आज्ञानुसार छपा है उसके पृष्ठ ॥ ५ ॥ कालम ॥ २ ॥ पंक्ति ॥ २६ ॥ से सफे ॥ ७ ॥ कालम ॥ २ ॥ सतर ॥ १३ ॥ तक निम्न लिखित राय लिखी है ॥ यथा—

जो इन तीन हुकम नामयांनु आप अपने पंथ सुधार

अखवार विच छाप दियों तां पंथभी गौर करलेवे । इनां चिठीआं ते तखत साहिबांदिआं मोहरां लगियां होइयां हन ॥ मैं चाहुंदा हां जो कौमी अखवार अपनी आपनी राय देन ॥ पर याद रखना चाहिये और इहना समझ लेना चाहिये जो इह मामूली जिहआं चिट्ठीआं नहींहन इनां चिट्ठीयांने पंथ विच बड़ी हिल्ल चुल्ल मचा दित्ती है ॥

(हजूर साहिब का हुकम नामा अर्थात् चिट्ठी)

१ ओं श्रीयुक्त सरदार समुंदसिंहजी ॥ श्रीवाहिगुरुजी की फते है ॥ सर्वत खालसा श्री हजूर साहिब व पुजारी मानसिंह ॥ आपकी पत्रका पहुंची सभहाल मालूम होया जो मुसलमानों के लिये अमृत छकाने की वावत लिखा है कि आजकल सिंहसभा वाले जो मुसलमानों को अमृत छकाऊंदे हैं सो ठीक है जां नही ॥ उसदा जवाव ॥ मुसलमानों को अमृत कदी नहीं छकाया जांदा ॥ अर ना

सटीपणी (फुट नोट)

(१)श्रीगुरु दसमजी के हुकम से विरुद्ध सिंहसभा भसौड़ रिश्रासत पटेआला ने बहुत सारे जन्म से मुसलमान स्त्री पुरुषो को अमृत छका कर सिंह वणाए है ॥ जिसकी सैहमती (संमती) चीफ खालसा दिवान करताहै जो सर्वत्र सिंह सभाओंकी वडी सभाहै ॥ देखो गुरुमुखी रिसाला वीरसुधार पत्र जो संमत ४३५ नानका साही में मुफीद आम प्रेस लहौर में छपे की पृष्ठ ४

गुरु का हुकम ही है ॥ अर आर्ती की मरयादा कदीम समोंसे चली आती है ॥ ऊदवाली वत्ती नाही जगाउनी चाहिये फकत ॥ दसखत पुजारी मानसिंह ॥

॥ पटने साहिब का हुकमनामा अर्थात चिट्ठी ॥

सरदार समुंदासिंह जी श्री वाहिगुरु जी की फते है ॥ पत्रिका पहुंची हाल मालूम होया जिसका उत्तर लिखा जाता है ॥ खालसाजी इह सभ मनमत्त है ॥ गुरुमहा-

---

पंक्ती २५ से २६ तक और पृष्ठ ५ पंक्ती इत्यादि मुसलमान सिंह वनाने उक्त वीरसुधारपत्र की पृष्ठ ३ पं० २७ से ३१ तक सं० १९५३ में इक जन्मदी मुसलमानी गुरुदेवकौर ॥ सं० १९५४ में इक जन्मदे मुसलमाननू निहालसिंह तीजे १९५५ में जन्मदे मुसलमाननू जगतसिंह ॥ सं० १९५६ में इक जन्मदी मुसलमानी नू मानकौर ॥ इत्यादि नाम रक्खे ॥

उक्त वीरसुधार पत्र पृष्ठ ३७ कालम १ पंक्ति ५ मौलवी करीमवखस को लखवीरसिंह वनाया ॥ और पंक्ती १५ वीवी नूरा को वरयाम कौर और पंक्ती १६ गुलाम मुहमद को हरनाम सिंह और पंक्ती १७ मुन्सी रूकनदीन को मतावसिंह पंक्ती १९ खैरदीन को गुरबखससिंह ॥ इत्यादि सिंहसभा भसौड़ नै मुसलमानों को अमृत छकाकर सिंह वणाया है चीफ खालसा की संमत्ती से और इसी प्रकार वहुत सिंहसभाओं ने अनेक मुसलमानों को सिंह वणाया है ॥

राज की सच्चे पातिसाहजी की आज्ञा चारवर्णों को अमृत छकाने की है ॥ मुसलमानों को रलाने की आज्ञा कहीं नहीं ॥ यथा ॥ तुर्क तुर्कनी से बचे॥ तुर्क न कीजै सिख ॥ इत्यादिक ॥ अमृत छकाने की आज्ञा फिर कहां है ॥ जिस मुसलमानी से युद्ध कीथे फिर अमृत छकाया जांदा है ॥ इस वास्ते यह सभ मन मत्ती है॥ झूठे लगाड़ ज्ञानसिंह ने गप लगाई है ॥ अर दित्तसिंह चाहता है कि सिखों की वेअदवी होवे क्युंकि उह खुद रमदासीआ है अर गुरु के हुकम से विरुद्ध करता है दित्तसिंह आप रमदासीआ होने के सवव घोल मसोल करके सिखों की निरदरी करानी चाहता है पहले तो मुसलमान सिख होता ही नही यह सभ अंधेर पंजाव में पड़रहा है दूसरे जो मुसलमान ऐसा ही प्रेमी हो तो अमृत छकाकर मज़वीओं में दाखल कीया जावे लेकन चार वरन में उसका थान नहीं होसक्ता अर आरती का हटादेना भी अथवा वत्ती न जगाउनी सभ मन मत है॥ दसखत बावा सुमेरसिंह महंत पटना साहिव ॥

सटीपणी (फुट नोट)

(१) देखो अवचला नगर साहिब की चिट्ठीपर नोट जो पीछे होचुका है वीरसुधार पत्रपर जिसमें गुरु हुकम विरुद्ध अनेक मुसलमान सिंह वणाए गए हैं ॥

॥ हुकमनामा श्रीअनंदपुर साहिब ॥

श्रीयुत सरदार समुंदसिंहजी॥ श्रीवाहगुरुजी की फते है॥आपकी पत्रका पहुंची सभ हाल मालूम हुआ आपके प्रश्नों का उत्तर दीआजाता है ॥ पहले जो आपने बाबत मुसलमान सिंह सजने के व आरती जगाउने के लिये पूछा है अर सिंह सभावाले जैसा कि अजकल कररहे हैं बह सभ दित्तसिंह रमदासीए के गुटके पड़ने से हिलजुल मचगई है याने मुसलमानों को सिंह सजाउना अर आरती की बत्ती न जगौना यह सभ मनमत्त है जिस साल सिंहसभा लाहौर में दित्तासिंह रमदासीए ने मुसलमानों को रलौने लीये जिकर कीया था उस वक्त लहौर में क्या हाल हुआ हम चारों तखतों में तो इत्तफाक होना ही था मगर खास अछे २ लियाकतदार सिंहसभा के मैंब्र अलैहदा होगए उसदिन थोंबड़ी अकलवाले दित्तासिंह की तरफ होगए॥ अर तेज़ अकलवाले उस से उलट होगए इस से जादे उमदा सबूत क्या होनेसकदा है यह सभ उस दित्तसिंह की ही मनमत्त है उसी दिन से मनमत्त के कीये हुये रसम नये नये होते जाते हैंन यह सब गुरुमत विरुद्ध है॥ यथा ससे के सींग अविद्या से राजा अकास के फूल वत ॥ कदाचित नहीं होती॥ इस तरां

मुसलमान सिख नहीं होनेसकदे और यह नही समझना चाहिये कि दित्तसिंह की मनमत्त से मुसलमान सिंहों में शामिल होगये हैं बल्कि वोह सिंह जिनोंने उनके साथ खान पान कीया है हमारी कोम में से मुसलमान होगये हैं और उन्होंने अपनी आस्तीनों में सांप डाल लिये हैं दूसरे आरती की बाबत लिखा है कि सिंहसभावाले बत्ती नहीं जगाउंदे यह भी दित्तसिंह की मनमत्त है गुरुसाहिब ने अपने मुखारविंद से उच्चारण कीया है ॥ यथा—

गगन मै थाल रविचंद दीपक बने। तारका मंडला जनक मोत्ती॥ आदिक, इसका अर्थ इस तरांपर है॥ गगन थालरूप मोत्ती से जड़त है चंदन के सुगंध से चंदन होता है सूर्य का काम रोशनी करना पवन हमेशा चौर करती है बनासपती फूल चढाती है इस जोती के वास्ते क्या सामग्री करेगा ॥ इत्यादिक। इसके अर्थ दित्तसिंह और उसके मत वाले यह सोच करतेहन कि धूप, घी, बत्ती आदिक सभ कीमत से आती हैं इस लिये बंद करनी चाहिये इस से आप सोचो कि यह मनमत्त नहीं तो और

सटीपणी (फुट नोट)

देखो अवचला नगर साहिब की चिट्ठी पर नोट जो पीछे हो चुका है वीरसुधार पत्रपर जिसमें गुरु हुकम विरुद्ध अनेक मुसल-मान सिंह बणाए हैं ॥

क्या है जब गुरू महाराज ने खुद यह जगन्नाथ के पास उच्चारण कीत्ती सी अर गुरूमहाराज खास निरगुन उपासक थे निरगुन की आरती हमेशे निरगुण होती है गुरू अंगदजी ने भी सरगुण पूजा निरगुण के वास्ते भाईवाले की जवानी जन्मसाखी पैड़ेमोखे से लिखवाई फिर गुरू अर्जनजीने गुरु ग्रंथसाहिवजी की वीड़ बदी और आज्ञा दई अर आप खुद आरती की म्रयादा करते रहे आदि तखत श्रीअमृत्सरजी में आजतक जारी है फिर दित्तसिंह और उसके उपासक मनमत्त से ही सभ म्रयादा विरुद्ध कररहे हैं नवो गुरुआं के मत से दशम गुरुजी की आज्ञा से न किसी मुसलमान ने अमृत छककर नाता, खान, पान, सिंहों के साथ कीया है और न गुरुआं का हुकम ही है इस वास्ते यह सभ मनमत्त के ढकौसले लगाए गए होए हैं क्यूं कि आज कल पंजाब में नवे २ गुटके छपरहे हन जो सभ विरुद्ध हन और दित्तसिंह खुद प्रेस का मुखतारकार है जैसी दलील आती है अखबार गुटके छाप देता है लेकन सानु आदि श्रीगुरु ग्रंथ साहिब। भाई गुर-

सटीपणी (फुट नोट)

(१) देखो अवचला नगर साहिब की चिट्ठी पर नोट पीछे जो वीरसुधार पत्रपर जिसमें गुरु हुकम विरुद्ध अनेक मुसलमान सिंह बणाए हैं॥

दासजी की वाणी ॥ नंदलालजी की वाणी । अते । भाई मनीसिंह । वा सूरजप्रकाश की बाणी पर चलना चाहिये इस से अलावा वाणी सभ विरुद्ध है लेकिन खियाल करो जवतक राजगान तख्त साहिबां की छापें व मोहरें न लगजावें तवतक यह जो काम=सिंहसभा वाले कर रहे हैंन झूठ पर झूठ है इह साडी पत्रका सभ सज्जनानूं सुणादेणी दीवाली दे मेलेपर=तांके इन मन मत्तों के कामों से वचे रहें फकत दसखत सोढी विअंत सिंह॥ हरिसिंह अकाल वुंगेवाला ॥ संतासिंह ॥ कृपा-लसिंह खजानची॥ वलवंत सिंह अनंद पुरसाहिव ॥००॥ और देखो जमीमा श्रीगुरु मतप्रचार लाहौर १ जून सन् १९०२ ई० के पृष्ठ । ६ । सतर ॥ ३३॥ से ३६ तक और सफा ७ सतर १ से ४ तक । जो (वहीगिया संत खालसा भाई अवतारसिंह जी ने गुरुमत प्रेस में चिट्ठी अर्थात् उक्त (जमीमा) छपवाकर प्रगट करया है) जिसमें से लेख निम्न लिखते हैं ॥ यथा ॥ अतकी जद असी श्री हजूर अवचला नगर साहिव सचखंड दी यात्रा नूं गए ता जिस वक्त पहिले अरदासा सुधाण लई हजूर हाजर होये तद होर कु रहतां दी पुछ दे नाल एह भी साडे तों पुछिआ गियासी कि तुसी सिंह सभिए तां नहीं इसपर असांने नहीं कहिआ तद साड़ा अरदासा सोधण होया अर तखत

अंबर भए
अंबरा पदपाया
गुरु नानक कल
नाम जपाया

नकल मोहर की।

श्रीबाबा नानकजी सहाइ । लिखतम श्रीदेहरे जी सों औलाद बाबानानक जी की बेदी बंस बावे माणक चंद के सर्वत ॥ बावे मेहरचंद के सर्वत ॥ श्रीहरद्वार के प्रोहित हमारे भवानीदास अर श्रीराम ॥ सदा के हैं जो कोई इनको मानेगा जु श्रीगंगाजी आवैगा मंनेगा सो निहाल होवैगा ॥

संवत ॥ १८७३ ॥ वैसाख शुदी ८ ॥

(नम्बर १०)

हुकमनामा गुरद्वारा श्री अनंदपुर जी ॥ पंडित बद्रीयालजी ज्वालापुर निवासी पास

नकलैं मोहरों की

श्री अकाल सहाइ
दसवां पातसाह
अजीतसिंह जझार
सिंह जी

अकाल सहाइ
अनंद पुरजी

श्रीकेसगड़ सहाइ
खालसाजी

नानक सरन सोढी
दीदारासिंह जी

अकाल
सहाइ श्रीअगमपुरा
मातातीवी साहिब जी

६ मोहरां और
फारसी में हैं।

१ ओं सतिगुरुजी ॥

श्रीमहा श्रीसाहिब श्रीकेसरसिंहजी ॥ श्रीसाहिब जै सिंहजी ॥ श्रीसाहिब नन्दसिंहजी ॥ श्रीसाहिब भरपूर सिंहजी ॥ श्रीसाहिब गुरबखशसिंहजी ॥ श्रीमहा श्री साहिब तिलोकसिंहजी ॥ श्रीसाहिब उत्तमसिंहजी ॥ श्रीसाहिब दिदारसिंहजी ॥ होर सर्वत सोढी श्री अनन्द पुरजी के लिखदित्ता तीर्थप्रोहित मिश्र भवानीदास श्री

धर्म्म रखनाजी ॥ इच्छाराम मिआणा छल करके सो-
ढिआं साहिबां ते लिखाय लेगया है सो उसनु प्रोहित
करके नहीं मंनना जो ओह प्रोहिताई का झगड़ा करे
सर्वत सोढिआं सर्वत खालसेजी विच झूठा है ॥ प्रोहित
मिश्र भवानीदास है श्रीगुरु रामदासजी की अंसका
श्रीगुरु खालसेजी का ॥ होर प्रोहिताई विच शरीक कोई
नहीं जे करै सो झूठा ॥ मिश्र भवानीदास की औलाद
के साथ झगड़ा करे सो झूठा ॥ हुकमनावा श्रीअनन्द
पुरजी लिखदित्ता ॥ सर्वत सोढिआं साहिबां नै जो ॥
दसखत टेकासिंह ग्रन्थी के हैं।संवत १८७६॥मंग्रप्रविष्टे २०।

(नम्बर ११)

पुराणी वही में दसखत गुरमुखी जो विहारीलाल के
पुत्र खूबचन्द लंगे से कनखल में लिखत के
दर्शन कर नकल किये हैं ॥

१ ओं सति नामकरता पुरुष

वावे अरजनजी का थंमा ॥ सम्बत १८१६ सावण
शुदी ७ रूपचन्द वनशीधर बहुड़मल्ल सुतभले उलाद
श्रीगुरू अमरदासजी के ॥ हरदुआरजी के असनान
कीआ । अगे जो कोई हमारे कुल का होइ सो मिश्र
गंगाजी का तीर्थ प्रोहित करके मनना ॥ वड़ियां कित्ता

सटीपणी (फ़ुटनोट)(१) वजुरगों के किये हुए धर्मपर कायम रहना

मकरसहाइ को जो बड़ओं के लिखे जोग पुरोहित तीर्थ का सही जानना ॥ पिताजी के अस्त लेकर आए ॥

(नम्बर १२)

—०—

श्रीगुरू गोविन्दसिंहजी महाराज ने अनेक तीर्थ यात्रा करतेहुए प्रयागराज में स्नान कर तीर्थप्रोहित घनस्याम को अनेक प्रकार के दान देकर पूर्व पिताजी के लिखत हुकमनामे की पुश्तपर दसखत करदीये ॥ जो तत्त खालसा की प्रमाणिक पुस्तक पंथ प्रकाश संवत १९४६ वि० में मतवै आफताव पंजाब लाहौर में छपी है उस के पृष्ठ ६०० पंक्ति ५ से ११ तक कथा गुरु१० विश्राम ४८ कवता अंक १० से १३ तक ॥

॥ दोहा ॥

सने सने मग चलत ईम पूरत दासन आस ॥
आए थिरे प्रयाग में न्हाये त्रिवेणी खास ॥
दान दियो बहु दिजन को उतरे संगति माहि ॥
लिख्यो पिख्यो गुरू नौम को घनस्याम द्विज पाहि ॥
ताहि पुश्तपर दशम गुरू इम करते लिखदीन ॥
जो गुरु थावे मम लिख्यो सो प्रमाण हम कीन ॥
अब लौ नामा हुकम सो है उन विप्पन पास ॥
ले भेटा निज सिक्ख ते दै दर्शन भरआस ॥

(नोट) उक्त हुकमनामा श्रीगुरु गोविंदसिंहजी का श्रीमुखवाणी है जिस श्रीमुख वाणीका प्रमाण देकर नवीन खालसाजी अपना पंथ (ढाईपा खिचड़ी जुदी पकानी चाहते हैं) उसी पुस्तक (वचित्र नाटिक ग्रन्थ) की वाणी से दसो गुरू एक रूपसे नवम गुरू तेग बहादर जी का ब्राह्मणों को दान देनेका हुकम स्पष्ट प्रगट है और श्रीगुरु गोविंदसिंहजी ने अपने उत्पन्न होने का कारण भी उक्त दान और तीर्थ स्नान ही कथन किया है ॥ यथा ॥ "अथ कवी जन्म कथनं" ॥ मुरपित पूर्व कियस पियाना ॥ भांत भांत के तीथ न्हाना ॥ जब ही जात त्रिवेणी भए ॥ 'पुंन्न दान' दिन करत वितए ॥ तही प्रकाश हमारा भयो ॥ पटना शहर विखे भव लेओ ॥ दशम ग्रन्थ साहिव वचित्र नाटिक ग्रन्थ अध्याय ७ अंक १=२ ॥ यह गुरूवाक्य उक्त हुकमनामे को पूर्ण रीति से पुष्टकर ब्राह्मणों को दान का जबरन हुकम दिलाता है और गुरू दसमजी ने नैनादेवी के पुजारियों को हुकमनामा दियाहुआ है जो अनन्दपुर के सोढीयों को दिखाकर पांच रुपये साल दर साल लेते हैं मित्रो इसी प्रकार गयाजी में पण्डा दाड़ीवाले और घनीयालालजी के पास गुरूजी का हुकमनामा है ॥ इसी तरह जगन्नाथ जी के पण्डे के पास हुकमनामा है गुरूओं का ॥

श्रीगुरु आदगूंथ साहिबजी अनेक प्रकार के दान का महात्म मानता है जो निन्दा करने से निष्फल हो जायगा ॥

यथा—

जेओहु अठिसठि तीर्थ न्हावै ॥ जेओहु द्वादश शिला पुजावै ॥ जेओहु कूप तटा देवावै ॥ करै निन्द सब विर्था जावै ॥ १ ॥ साधका निन्दक कैसे तरै ॥ सर पर जानहु नर्क ही परै ॥ १ ॥ रहाउ । जेओहु ग्रहन करै कुलखेत ॥ अरपै नार सिंगार समेत॥ सगली स्मृति श्रवणी सुनै ॥ करै निंद कवनै नहीं गुनै ॥ २ ॥ जेओहु अनक प्रसाद करावै ॥ भूमि दान सोभा मंडि पावै ॥ अपना विगार विराना सांढै ॥ करै निंद बहुजोनी हांढै ॥ ३ ॥ निंदा कहा करहु संसारा ॥ निंदक का प्रगट पहारा ॥ निंदक सोध साध विचरिआ ॥ कहु रविदास पापी नर्क सधारिया ॥ ४ ॥ आ० ग्रं० राग गौड़ी वाणी श्री रविदास भगत शब्द ॥ २ ॥

(नोट)

मित्रो विचार करो (जोकुछ लेख लिख्यो०) इन सवैयों के अर्थ खालसा को दान देने के लिये कैसे होसक्ते हैं ? जो महा अनर्थ है और ग्रन्थ साहिबादि से समग्र विरुद्ध है और नवीन खालसा ने सनातनधर्म और

ब्राह्मणों की निंदा करना जो मुख्य समझ रखा है यह भी आद ग्रन्थसाहिब से विरुद्ध है उक्त शब्दमें देख लें निंदक के वास्ते गुरु साहिब क्या फरमाते हैं और अनेक प्रकार के दान का माहातम कैसी उत्तम रीति से मानते हैं ॥

अधर्म से बचने के लिये सूचना ॥

मित्रो तत्तखालसाजी गुरुमत प्रभाकर अपनी गुर मुखी पुस्तक के पृष्ठ ५ । पंक्ति ७ से १० ॥ प्रतिज्ञा पूर्वक लिखते हैं कि ग्रन्थ साहिब के उपदेशों को इस पुस्तक में अत्तर अक्षर क्रमानुसार संग्रह किया है ॥ विचारकै देखाजावै तो वास्तव में भाई साहिब ने ग्रन्थ साहिब के उपदेश को रद्दी करदिया है अर्थात् जो गुरु गोविंदसिंह जी ने अपने पश्चात् गुरु गद्दीपर ग्रन्थ साहिब को गुरु बनाकर स्थापन किया था उसको आधा तोड़दिया अर्थात् भगतों की वाणी को व्यर्थ समझकर गुरुवाणी से नीचे गिराकर अपणी कपोलकल्पित वाणी के बराबर लिखा है जिसकारण भाई मनीसिंहजी के बंद बंद जुदे हुए थे ॥ क्योंकि गुरु अरजनजी ने गुरुओं की वाणी पुष्ट करणार्थ (शहादत रूप) जोती जोत समाए (मृत्यु) हुए भगतों की वाणी गुरु वाणी से उत्तम समझ संग्रह की है ॥ उक्त भाईजी ने गुरु अरजनदेवजी की " भगत

वाणी संग्रह" के उद्यम को व्यर्थ समझकर निरादर करदिया जो सच्ची खोज करनेपर साफ जाहर हो जावैगा कि गुरु अरजनजी ने भगतों के नाम से आप भगत वाणी लिखवाई, क्योंकि—उस वक्त कोई भक्त जिन्दा न था ॥

(नोट)

गुरुमत प्रभाकर की वावत (खालसा सुधारतरु) की तीसरी पोथी जो प्रथमबार (ओरिऐंटल प्रेस लाहौर) में छपी है उसके पृष्ठ २ वा ३ पर साफ लिखा है कि गुरुमत प्रभाकर के माननेवाले ग्रन्थसाहिव[१] को गुरु नहीं मानते ॥

मित्रो आप विचार करसक्ते हैं कि जब तत्तखालसा जी ने आद ग्रन्थसाहिव को तोड़ फोड़कर रद्दी करादिया तो फिर (जो कुछ लेख लिखयो०) इन सवैयों के अर्थ बदलने में बुद्धि खरच करें तो क्या आश्चर्य है इन्होंने

सटीपणी (फुट नोट)

(१) देखो खालसा दिवानदे फैसले जो तीजी वार मुफीद आम प्रेस लाहौर गुरुमुखी छपे रिशाले की पृष्ठ १० पंक्ति २९ और पृष्ठ ११ पंक्ति १ में गुरुमत प्रभाकर को विद्वानी के फखर का ग्रन्थ माना है ॥ सिंहसभा भसौड़ और चीफ खालसा दिवान नै ॥

साहिब दे मंदर दी प्रकरमा करनी मिलीसी सोड तों प-
हिला भाई महरासिंह चावले लाहौर निवासीदे नाल बड़ी
तंगी होईसी इकरारनामा लैके तनखाह लगाके अर-
दासा सोधिआसी ॥

नोट—

उक्त लेख से प्रगट है कि गुरूस्थानों में सिंहसभाओं
की और उनके लेख की कुछ प्रतिष्ठा नहीं मित्रो जो तत्त-
खालसा (सिंहसभा के प्रतिष्ठित और लेखक हैं) इस
कारण इनके लेख की भी प्रतिष्ठा नहीं समझनी और (जो
कुछ लेखलिखयो) सवैयों के अर्थ से अनर्थ किया है
उसकी गुरुमत में कब प्रतिष्ठा होसक्ती है कदापि नहीं॥

इति.

(खंडन करताओं से शास्त्रार्थ के लिये पांच नियम)

(१) तत्त खालसाजी किन२ ग्रंथों को मानते हो सर्वत्र
का नाम पृथक् २ लिखना होगा ।

(२) तत्त खालसाजी जिन २ ग्रंथों को धर्म्म ग्रंथ मानों
उनको पूर्ण रीति से मानना होगा उन ग्रंथों के किसी खास
प्रसंग और प्रमाण को अप्रामाणिक नहीं कहना होगा ।

(३) तत्त खालसाजी जिन २ ग्रंथों को धर्म्मग्रंथ मानों
उन ही ग्रंथों से अपना मत और व्यवहार (धार्मिक

और व्यावहारिक) चाल चलन जरूर सिद्ध करना होगा॥

(४) तत्त्वालसाजी आपका प्रामाणिक धर्म्मग्रंथ शास्त्रार्थ में परस्पर विरोध में आजायगा तो उसको झूठा ग्रंथ लिखकर हम को लेख देना होगा॥

(५) तत्त्वालसाजी शास्त्रार्थ तकरीरी चाहे तहरीरी (लेखिक अथवा वार्त्तिक) हो आप्त (सच्चा) पुरुष मध्यस्थ जरूर करना होगा॥

ह० गुरुविद्यारत्न–

मुखलाल उपदेशक
श्रीभारतधर्म्म महामण्डल
रोपड़ निवासी.

इश्तहार

मित्रों मेरी रचित पुस्तकें और यह छपनेवाली हैं यदि कोई धनी चाहे तो छपवादे

(१) श्रीगुरूमत व्यवहार भानु (२) श्रीगुरूमत दिवाकर (३) श्रीगुरूमत विवाह संस्कार (४) श्रीगुरूमत मृतक संस्कार (५) श्रीभाई गुरदासजी की वार १० का श्रीगुरू ग्रंथसाहिबजी से मंडन (६) एक खालसा १०० रु० के झूठे लालच में उत्तर पर उत्तर (७) आर्यसमाज में पोपलीला (८) इसाईयों की बायबिल का खंडन पूर्वार्ध और उत्तरार्ध (९) गहिर गंभीर मनके ढोलका पोल जिसमे स्वामी विष्णुदास के जत्तीपने आदिक झूठ का खूब प्रकाश किया गया है (१०) श्रीगुरू घर में दुर्गापूजन दुवारे छपेगी।

(यह पुस्तकें छपीहुई तयार हैं)

(११) नवीन सिंहशिक्षा शास्त्री ।-)

(१२) नवीन सिंहशिक्षा गुरमुखी ।=)

(१३) श्रीगुरूघर में दानविधि ।)

पुस्तक मिलने का पत्ता—

शहर रोपड़ सुखलाल उपदेशक और पंडित ब्रह्मानंदजी से मिलेंगी